International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

उद्यमों में पर्यावरणीय प्रबंधन, हरित मानव संसाधन प्रबंधन और पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार: एक विषयगत अध्ययन

फूल चन्द महोलिया
सह-आचार्य अर्थशास्त्र, सेठ आरएल सहरिया राजकीय पीजी महाविद्यालय कालाडेरा
ई-मेल - pcmaholia@ gmail.com

सार-संक्षेप
एसएमई में पर्यावरणीय प्रबंधन, कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व, पर्यावरणीय रणनीति, हरित मानव संसाधन प्रबंधन, नेतृत्व और पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार से संबंधित साहित्य का विषयगत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। शोध पत्रों की व्यवस्थित समीक्षा के आधार पर यह अध्ययन उन प्रमुख सैद्धांतिक और व्यावहारिक कारकों की पहचान करता है जो एसएमई में पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के अपनाने और क्रियान्वयन को प्रभावित करते हैं। समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि एसएमई में पर्यावरणीय प्रबंधन केवल नियामकीय अनुपालन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संसाधन उपलब्धता, प्रबंधकीय दृष्टिकोण, संगठनात्मक सीख, हितधारक दबाव और नेतृत्व की प्रतिबद्धता से भी गहराई से प्रभावित होता है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि पर्यावरणीय रणनीति और प्रतिस्पर्धात्मक लाभ के बीच सकारात्मक संबंध पाया जाता है, जबकि व्यक्तिगत स्तर पर पर्यावरणीय चिंता, जागरूकता, ज्ञान और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार को आकार देते हैं। तथापि, जागरूकता और व्यवहार के बीच का अंतर अभी भी एक महत्वपूर्ण शोध-चुनौती बना हुआ है। यह अध्ययन भविष्य के अनुसंधान के लिए एक समेकित वैचारिक ढांचा, विकासशील अर्थव्यवस्थाओं पर अधिक ध्यान, तथा दीर्घकालिक और बहु-स्तरीय शोध डिज़ाइन की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

मुख्य शब्द- पर्यावरणीय प्रबंधन, हरित मानव संसाधन प्रबंधन, पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार, सतत विकास, हरित कार्यस्थल

1 परिचय

पर्यावरणीय स्थिरता और कॉर्पोरेट उत्तरदायित्व आज संगठनात्मक अध्ययन के सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में शामिल हो चुके हैं। विशेष रूप से छोटे और मध्यम उद्यमों, अर्थात एसएमई, के संदर्भ में पर्यावरणीय प्रबंधन का प्रश्न और भी जटिल हो जाता है, क्योंकि इन संगठनों के पास सीमित वित्तीय संसाधन, कम औपचारिक संरचनाएँ और विशेषज्ञता की कमी जैसी चुनौतियाँ होती हैं। इसके बावजूद, एसएमई आर्थिक विकास, रोजगार सृजन और नवाचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिसके कारण उनके पर्यावरणीय व्यवहार और प्रबंधन प्रथाओं का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है। हाल के वर्षों में यह समझ विकसित हुई है कि एसएमई में पर्यावरणीय प्रबंधन केवल नियमों का पालन करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह एक रणनीतिक और संगठनात्मक परिवर्तन का क्षेत्र भी है।

इस अध्ययन का आधार यह धारणा है कि एसएमई में पर्यावरणीय प्रबंधन को समझने के लिए केवल एक दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं है। इसके लिए संसाधन-आधारित, हितधारक-आधारित, वैधता-आधारित, नेतृत्व-आधारित और व्यवहार-आधारित दृष्टिकोणों को एक साथ देखना आवश्यक है। साहित्य यह संकेत देता है कि शीर्ष प्रबंधन का दृष्टिकोण, संगठनात्मक संस्कृति, कर्मचारी भागीदारी, हरित मानव संसाधन प्रथाएँ और बाह्य दबाव, सभी मिलकर पर्यावरणीय निर्णयों और प्रथाओं को प्रभावित करते हैं। इसी प्रकार, पर्यावरणीय रणनीति

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

और प्रतिस्पर्धात्मक लाभ के बीच संबंध यह दर्शाता है कि पर्यावरणीय प्रबंधन को लागत के बजाय एक अवसर के रूप में देखा जा सकता है।

व्यक्तिगत स्तर पर भी पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार अनेक मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होता है। पर्यावरणीय चिंता, जागरूकता, ज्ञान, पहचान, विश्वास और व्यक्तित्व लक्षण ऐसे प्रमुख तत्व हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि व्यक्ति पर्यावरण के प्रति कितनी गंभीरता से प्रतिक्रिया देगा। फिर भी साहित्य में यह लगातार देखा गया है कि जागरूकता होने के बावजूद व्यवहार में उसका पूर्ण रूप से रूपांतरण नहीं हो पाता। यही अंतर इस अध्ययन को और अधिक प्रासंगिक बनाता है, क्योंकि यह न केवल उपलब्ध ज्ञान का समेकन करता है, बल्कि शोध-अंतरालों की भी पहचान करता है।

इस विषयगत समीक्षा का उद्देश्य एसएमई में पर्यावरणीय प्रबंधन, CSR, हरित रणनीति, नेतृत्व और पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार से संबंधित अनुसंधान को एक समेकित रूप में प्रस्तुत करना है। यह अध्ययन यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि कौन-से कारक एसएमई को पर्यावरणीय प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं, किन बाधाओं का वे सामना करते हैं, और किन परिस्थितियों में पर्यावरणीय चेतना वास्तविक व्यवहार में परिवर्तित होती है। साथ ही, यह समीक्षा भविष्य के अनुसंधान के लिए एक सुदृढ़ वैचारिक आधार प्रदान करती है, विशेषकर विकासशील अर्थव्यवस्थाओं, बहु-स्तरीय विश्लेषण और दीर्घकालिक शोध-डिज़ाइन के संदर्भ में।

2 वैचारिक और सैद्धांतिक आधार

पर्यावरणीय व्यवहार और कॉर्पोरेट पर्यावरणीय प्रबंधन के अध्ययन में अनेक सैद्धांतिक ढांचों का प्रयोग किया गया है, क्योंकि ये ढांचे शोध को वैचारिक आधार प्रदान करते हैं और यह समझने में मदद करते हैं कि व्यक्ति तथा संगठन पर्यावरण के प्रति किस प्रकार प्रतिक्रिया करते हैं। अज़ेन और फ़िशबीन का योजनाबद्ध व्यवहार सिद्धांत इस क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी माना गया है, क्योंकि यह व्यक्ति के दृष्टिकोण, सामाजिक मानदंडों और व्यवहारिक नियंत्रण की धारणा के आधार पर उसके व्यवहार की व्याख्या करता है। इसी कारण यह सिद्धांत हरित उत्पादों की खरीद, पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार और उपभोक्ता निर्णय-प्रक्रिया के अध्ययन में व्यापक रूप से अपनाया गया है। यह मॉडल यह स्पष्ट करता है कि पर्यावरणीय व्यवहार केवल जानकारी या जागरूकता से नहीं, बल्कि सामाजिक दबाव और व्यक्ति की स्वयं की क्षमता-धारणा से भी प्रभावित होता है (अज़ेन एवं फ़िशबीन, 1980; करामी इत्यादि, 2021).

इसी प्रकार, मिचेल, एगल और वुड द्वारा विकसित हितधारक पहचान और प्रमुखता का सिद्धांत यह बताता है कि व्यवसाय अपने विभिन्न हितधारकों में किन्हें अधिक महत्त्व देते हैं और निर्णय-प्रक्रिया में किसका प्रभाव अधिक होता है। यह सिद्धांत विशेष रूप से एसएमई के पर्यावरणीय निर्णयों को समझने में प्रासंगिक है, क्योंकि छोटे उद्यमों में हितधारकों की पहचान, उनका दबाव और उनकी प्राथमिकताएँ बड़ी कंपनियों की तुलना में भिन्न होती हैं। छोटे उद्यमों में मालिक, ग्राहक, आपूर्तिकर्ता, स्थानीय समुदाय और नियामक अपेक्षाकृत अधिक प्रत्यक्ष भूमिका निभा सकते हैं, इसलिए पर्यावरणीय प्रबंधन की दिशा अक्सर इन संबंधों के आधार पर तय होती है (मिचेल इत्यादि, 1997).

टेलर आदि ने पर्यावरणीय प्रबंधन प्रणालियों के लेखापरीक्षण को वैधता सिद्धांत के दृष्टिकोण से समझाया है। इस दृष्टिकोण के अनुसार संगठन केवल पर्यावरणीय प्रदर्शन सुधारने के लिए ही नहीं, बल्कि अपनी सामाजिक स्वीकृति और संस्थागत वैधता बनाए रखने के लिए भी पर्यावरणीय प्रणालियाँ अपनाते हैं। ग्रे आदि ने कॉर्पोरेट सामाजिक और पर्यावरणीय रिपोर्टिंग में आए परिवर्तनों और चुनौतियों पर चर्चा करते हुए जवाबदेही,

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

पारदर्शिता और वैधता की भूमिका को रेखांकित किया। इन दोनों दृष्टिकोणों से यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरणीय रिपोर्टिंग और प्रबंधन केवल तकनीकी या अनुपालन संबंधी गतिविधियाँ नहीं हैं, बल्कि वे संगठन की सामाजिक विश्वसनीयता और वैधता से भी गहराई से जुड़ी हैं (टेलर आदि, 2001; ग्रे आदि, 1996).

हार्ट का प्राकृतिक संसाधन-आधारित दृष्टिकोण कॉर्पोरेट पर्यावरणीय रणनीति के क्षेत्र में एक प्रमुख सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार पर्यावरणीय स्टीवर्डशिप, प्रदूषण-निवारण, उत्पाद-प्रबंधन और सतत विकास जैसी क्षमताएँ फर्म की प्रतिस्पर्धात्मक सफलता के लिए रणनीतिक संसाधन हैं। यह मॉडल पारंपरिक संसाधन-आधारित दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुए यह तर्क देता है कि प्राकृतिक पर्यावरण केवल प्रतिबंधों का स्रोत नहीं, बल्कि दीर्घकालिक प्रतिस्पर्धात्मक लाभ का आधार भी हो सकता है। इस कारण यह ढांचा उन अध्ययनों में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है जो पर्यावरणीय रणनीति, नवाचार और सतत प्रतिस्पर्धा पर केंद्रित हैं (हार्ट, 1995).

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के संदर्भ में मॉयर ने इसकी अवधारणा, परिभाषा और अर्थ पर विचार किया, जबकि क्लार्क ने कॉर्पोरेट सामाजिक रिपोर्टिंग को एक नैतिक प्रथा के रूप में देखा। अगुइनिस और ग्लावास ने CSR साहित्य की विस्तृत समीक्षा करते हुए यह दिखाया कि इस क्षेत्र में बहुत कुछ ज्ञात है, लेकिन अनेक आयाम अभी भी अस्पष्ट हैं। उनका कार्य CSR को बहु-स्तरीय और बहु-विषयी परिघटना के रूप में समझने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि CSR केवल परोपकार या दान नहीं, बल्कि संगठनात्मक रणनीति, हितधारक संबंध और नैतिक जवाबदेही से जुड़ी एक व्यापक अवधारणा है (मॉयर, 2001; क्लार्क, 1998; अगुइनिस एवं ग्लावास, 2012).

हावर्ड-ग्रेनविले आदि ने कॉर्पोरेट पर्यावरणीय निर्णयों को प्रभावित करने वाले आंतरिक कारकों, जैसे संगठनात्मक संस्कृति, प्रबंधकीय मूल्य और आंतरिक संरचना, पर बल दिया। यह दृष्टिकोण बताता है कि पर्यावरणीय उत्तरदायित्व केवल बाहरी दबावों का परिणाम नहीं होता, बल्कि संगठन के भीतर मौजूद मूल्य, विश्वास और निर्णय-तंत्र भी इसकी दिशा तय करते हैं। इस प्रकार आंतरिक संगठनात्मक संदर्भ पर्यावरणीय रणनीति को समझने में उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना बाहरी हितधारक दबाव (हावर्ड-ग्रेनविले इत्यादि, 2007).

अंत में, ग्लाविक और लुकमान ने सततता से संबंधित शब्दों और उनकी परिभाषाओं की समीक्षा की, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि इस क्षेत्र में शब्दावली की एकरूपता अत्यंत आवश्यक है। जब सततता, हरित प्रबंधन, पर्यावरणीय चेतना और संबंधित शब्द अलग-अलग अर्थों में प्रयुक्त होते हैं, तो शोध की वैचारिक स्पष्टता प्रभावित होती है। इसलिए इन शब्दों की परिभाषात्मक सटीकता अनुसंधान की विश्वसनीयता और तुलनात्मकता दोनों को बेहतर बनाती है (ग्लाविक एवं लुकमान, 2007). कुल मिलाकर, ये सभी सिद्धांत और अध्ययन मिलकर पर्यावरणीय व्यवहार तथा कॉर्पोरेट पर्यावरणीय प्रबंधन की एक व्यापक वैचारिक संरचना निर्मित करते हैं, जिसमें व्यक्ति, संगठन, हितधारक, वैधता, संसाधन और सततता सभी परस्पर जुड़े हुए आयाम के रूप में सामने आते हैं (अज़ेन एवं फ़िशबीन, 1980; मिचेल इत्यादि, 1997; हार्ट, 1995; अगुइनिस एवं ग्लावास, 2012).

3 पर्यावरणीय प्रबंधन: बाधाएं, अवसर और अपनाने की प्रक्रिया

साहित्य संकेत करता है कि फर्म का आकार पर्यावरणीय प्रबंधन के अपनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि छोटे और मध्यम उद्यमों के पास बड़े उद्यमों की तुलना में संसाधन, विशेषज्ञता और औपचारिक प्रणालियाँ अपेक्षाकृत सीमित होती हैं। डिल्ट्स और प्रौघ (1989) के तुलनात्मक अध्ययन ने छोटे और बड़े

उद्यमों की रणनीतिक पर्यावरणीय विकल्पों में यही अंतर रेखांकित किया, जबकि गेरान्स और हचिन्सन (2000) ने यह तर्क दिया कि एसएमई में सतत विकास की दिशा में अभी भी काफी लंबा रास्ता तय करना बाकी है। गेरस्टेन्फेल्ड और रॉबर्ट्स (2000) ने भी यह स्पष्ट किया कि छोटे और मध्यम आकार के उद्यमों में पर्यावरणीय प्रबंधन के लिए कुछ विशिष्ट बाधाएँ और अवसर दोनों मौजूद होते हैं, जो उन्हें बड़े संगठनों से अलग बनाते हैं। फ्राइडमैन इत्यादि (2000) ने एसएमई और पर्यावरण के संबंध का मूल्यांकन करते हुए यह दिखाया कि एक विशिष्ट पर्यावरणीय पहल का प्रभाव भी संगठन के आकार और संदर्भ पर निर्भर कर सकता है।

हिलरी (1999) ने एसएमई में पर्यावरणीय प्रबंधन प्रणालियों के अपनाने में आने वाली बाधाओं, अवसरों और प्रेरकों का व्यापक मूल्यांकन किया, जिसमें वित्तीय सीमाओं, ज्ञान की कमी और नियामक जटिलता को प्रमुख अवरोध के रूप में पहचाना गया। इसी प्रकार, अकट और जीनो (2000) ने क्वीन्सलैंड के एसएमई को हरित बनाने में प्रबंधन संबंधी चुनौतियों की पहचान की, जबकि बुबना-लिटिक और डे ल्यू (1999) ने ऑस्ट्रेलियाई एसएमई के सर्वेक्षण के आधार पर हरित लाभों की जाँच की। ग्राउंडवर्क (1995, 1998) की रिपोर्टों ने भी छोटी फर्मों और पर्यावरण के बीच संबंध पर प्रकाश डालते हुए यह दिखाया कि छोटी फर्में पर्यावरणीय प्रबंधन में विशेष कठिनाइयों का सामना करती हैं। विलियमसन और लिन्च-वूड (2001) ने एसएमई पर्यावरणीय प्रथाओं के लिए एक नया प्रतिमान प्रस्तावित किया, जो छोटे उद्यमों की विशिष्ट आवश्यकताओं, सीमाओं और व्यवहारिक वास्तविकताओं को अधिक उपयुक्त रूप से प्रतिबिंबित करता है।

अंतर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय अध्ययनों ने भी इस तथ्य को पुष्ट किया है कि एसएमई की पर्यावरणीय प्रथाएँ देश, नीति-परिवेश और उद्योग-संरचना के अनुसार भिन्न होती हैं। रदरफोर्ड इत्यादि (2000) ने पर्यावरणीय प्रबंधन और छोटी फर्मों का अंतर्राष्ट्रीय तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया, जिसमें विभिन्न देशों की छोटी फर्मों की पर्यावरणीय प्रथाओं में अंतर पहचाने गए। टिली (1999) ने यूके में छोटी फर्मों की पर्यावरणीय रणनीति का विश्लेषण किया, जबकि बियोंदी इत्यादि (2000) ने पर्यावरणीय प्रबंधन प्रणालियों और एसएमई के बीच संबंधों की जाँच की। नेदरवुड (1998) ने पर्यावरणीय प्रबंधन प्रणालियों के सिद्धांत और रणनीतियों की समीक्षा करते हुए यह संकेत दिया कि छोटे उद्यमों के लिए मानकीकृत EMS मॉडल को स्थानीय वास्तविकताओं के अनुरूप अनुकूलित करना आवश्यक है।

एसएमई के अनुभवों पर आधारित अध्ययन यह भी दिखाते हैं कि पर्यावरणीय अनुक्रियाशीलता, व्यक्तिगत और संगठनात्मक सीखने, और स्थानीय सहभागिता के बीच घनिष्ठ संबंध है। पेट्स इत्यादि (1998) ने यह देखा कि पर्यावरणीय अनुक्रियाशीलता सीखने की प्रक्रियाओं से जुड़ी होती है, जबकि रोवे और हॉलिंग्सवर्थ (1996) ने एसएमई के पर्यावरणीय प्रदर्शन में सुधार के व्यावहारिक उपायों की पहचान की। पीटर्स और टर्नर (2002) ने एसएमई के पर्यावरणीय दृष्टिकोण और स्थानीय स्तर पर स्वैच्छिक पहलों में भागीदारी की जाँच की, और पामर और एंड्रूज़ (1997) ने एसएमई को हरित बनाने में टीम-कार्य की भूमिका पर बल दिया। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि छोटे उद्यमों में पर्यावरणीय सुधार केवल तकनीकी परिवर्तन से नहीं, बल्कि संगठनात्मक सीख, सहभागिता और प्रबंधन शैली से भी प्रभावित होता है।

पर्यावरणीय प्रबंधन प्रणाली के अपनाने के संदर्भ में जुत्शी और सोहल (2002) ने ऑस्ट्रेलियाई संगठनों में EMS अपनाने के कारणों, लाभों और बाधाओं की पहचान की, जिसमें नियामक अनुपालन, प्रतिष्ठा में सुधार और लागत में कमी प्रमुख प्रेरक कारक पाए गए। पैरी (2001) ने ISO 14001 मानक के विकास और भविष्य की दिशा पर प्रकाश डाला, जिससे यह संकेत मिलता है कि मानकीकृत पर्यावरणीय प्रबंधन ढांचे छोटे और

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

बड़े दोनों प्रकार के संगठनों के लिए प्रासंगिक हैं, लेकिन उनका उपयोग संगठनात्मक क्षमता और संसाधनों पर निर्भर करता है। ऑस्ट्रेलियाई ब्यूरो ऑफ स्टैटिस्टिक्स (2003) ने लघु व्यवसायों की स्थिति पर आंकड़े प्रस्तुत किए, जो इस क्षेत्र में नीति-निर्माण और तुलना के लिए आधार प्रदान करते हैं।

एसएमई के पर्यावरणीय प्रबंधन में स्वामी और प्रबंधकों की जागरूकता, दृष्टिकोण और व्यवहार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी गई है। शेपर (2001) ने पश्चिमी ऑस्ट्रेलियाई सामुदायिक फार्मेसी क्षेत्र में लघु व्यवसाय स्वामियों और प्रबंधकों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण और प्रथाओं की जाँच की, जबकि शेपर (2002) ने हरित खरीद के पूर्वसूचक कारकों का अध्ययन किया। गाडेन इत्यादि (2009) ने एसएमई में पर्यावरणीय जागरूकता और प्रथाओं का अनुभवजन्य अध्ययन प्रस्तुत करते हुए यह पाया कि जागरूकता और वास्तविक प्रथाओं के बीच अंतर बना रह सकता है। नैफ़िगर और मोंटैग्नो (2003) ने अमेरिकी लघु व्यवसायों में पर्यावरणीय चेतना की धारणाओं का अध्ययन किया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि स्वामी-प्रबंधक की सोच पर्यावरणीय व्यवहार को गहराई से प्रभावित करती है।

आगे के अध्ययनों ने यह भी दिखाया कि पर्यावरणीय उत्तरदायित्व एसएमई के लिए प्रतिस्पर्धात्मक लाभ का स्रोत बन सकता है। सिम्पसन इत्यादि (2004) ने इस संभावना की जाँच की, जबकि प्रेटर और घोष (2005) ने यूरोप में अमेरिकी एसएमई की परिचालन प्रथाओं का विश्लेषण किया। विलियमसन इत्यादि (2006) ने विनिर्माण एसएमई में पर्यावरणीय व्यवहार के प्रेरकों और उनके CSR निहितार्थों की पहचान की। नुल्कर (2014) ने एसएमई और पर्यावरणीय प्रदर्शन के लिए हरित व्यवसाय रणनीतियों का एक ढांचा प्रस्तुत किया, मूसा और चिन्नियाह (2016) ने मलेशियाई एसएमई के हरित बनने की चुनौतियों का विश्लेषण किया, और पियाथनावोंग इत्यादि (2019) ने थाई विनिर्माण क्षेत्र में परिचालन पर्यावरणीय सततता दृष्टिकोणों के अपनाने की जाँच की। रामली इत्यादि (2022) ने हरित पर्यावरणीय चिंताओं के प्रति संगठनात्मक जागरूकता बढ़ाने के लिए पर्यावरणीय सततता के तरीकों की पहचान की, जिससे यह संकेत मिलता है कि एसएमई के लिए पर्यावरणीय प्रबंधन अब केवल अनुपालन का विषय नहीं, बल्कि रणनीतिक परिवर्तन का भी विषय बन चुका है।

4 पर्यावरणीय जागरूकता, हरित व्यवहार और प्रथाएं

एसएमई के पर्यावरणीय प्रबंधन में स्वामी और प्रबंधकों के दृष्टिकोण तथा जागरूकता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इनके विचार ही अक्सर यह तय करते हैं कि पर्यावरणीय नीति व्यवहार में बदलेगी या नहीं। शेपर (2001) ने पश्चिमी ऑस्ट्रेलियाई सामुदायिक फार्मेसी क्षेत्र में लघु व्यवसाय स्वामियों और प्रबंधकों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण तथा प्रथाओं की जांच की, जबकि शेपर (2002) ने अपने अनुवर्ती अध्ययन में हरित खरीद को प्रभावित करने वाले पूर्वसूचक कारकों की पहचान की। इन अध्ययनों से यह संकेत मिला कि सकारात्मक दृष्टिकोण के बावजूद वास्तविक प्रदर्शन कई व्यावहारिक सीमाओं से प्रभावित हो सकता है.

गाडेन इत्यादि (2009) ने एसएमई में पर्यावरणीय जागरूकता और प्रथाओं पर अनुभवजन्य अध्ययन प्रस्तुत किया। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि बाह्य दबावों और आंतरिक जागरूकता के बीच संबंध मौजूद है, लेकिन जागरूकता हमेशा औपचारिक पर्यावरणीय प्रणालियों में परिवर्तित नहीं होती। नैफ़िगर और मोंटैग्नो (2003) ने अमेरिकी लघु व्यवसायों में पर्यावरणीय चेतना की धारणाओं का अध्ययन किया, जिससे यह समझ मिलती है कि स्वामी-प्रबंधकों की सोच, संसाधन उपलब्धता और संगठनात्मक संदर्भ पर्यावरणीय व्यवहार को आकार देते हैं.

सिम्पसन इत्यादि (2004) ने एसएमई में पर्यावरणीय उत्तरदायित्व की प्रतिस्पर्धात्मक लाभ देने की क्षमता की जांच की। उनके निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि हरित प्रथाएँ केवल अनुपालन का साधन नहीं, बल्कि बाजार में भिन्नता और प्रतिष्ठा सुधारने का माध्यम भी बन सकती हैं। प्रेटर और घोष (2005) ने यूरोप में अमेरिकी एसएमई की वर्तमान परिचालन प्रथाओं का विश्लेषण किया, जबकि विलियमसन इत्यादि (2006) ने विनिर्माण एसएमई में पर्यावरणीय व्यवहार के प्रेरकों और उनके कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व निहितार्थों की पहचान की। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि एसएमई की पर्यावरणीय गतिविधियाँ संगठनात्मक संस्कृति, बाह्य अपेक्षाओं और प्रतिस्पर्धात्मक रणनीति से जुड़ी होती हैं.

नुल्कर (2014) ने एसएमई और पर्यावरणीय प्रदर्शन के लिए हरित व्यवसाय रणनीतियों का एक ढांचा प्रस्तुत किया, जो यह दिखाता है कि छोटे उद्यम संरचित पर्यावरणीय रणनीतियों के माध्यम से अपना प्रदर्शन सुधार सकते हैं। मूसा और चिन्नियाह (2016) ने मलेशियाई एसएमई के हरित बनने की चुनौतियों का विश्लेषण किया, जिससे यह सामने आया कि संसाधन, क्षमता और कार्यान्वयन बाधाएँ इस प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। पियाथनावोंग इत्यादि (2019) ने थाई विनिर्माण क्षेत्र में परिचालन पर्यावरणीय सततता दृष्टिकोणों के अपनाने की जांच की, जबकि रामली इत्यादि (2022) ने हरित पर्यावरणीय चिंताओं के प्रति संगठनात्मक जागरूकता बढ़ाने के उपायों की पहचान की। इन कार्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि एसएमई में पर्यावरणीय परिवर्तन के लिए केवल नीति नहीं, बल्कि संगठनात्मक सीख और जागरूकता भी आवश्यक है.

5 कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व, सामाजिक उत्तरदायित्व और उत्तरदायी व्यवसाय मॉडल

मॉयर (2001) ने कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधारणा के अर्थ और व्यापकता पर प्रकाश डालते हुए यह दिखाया कि CSR केवल दान या छवि-निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक अपेक्षाओं, नैतिक दायित्व और व्यापारिक निर्णयों के व्यापक संदर्भ से जुड़ा है। अगुइनिस और ग्लावास (2012) ने CSR साहित्य की व्यापक समीक्षा प्रस्तुत करते हुए यह स्पष्ट किया कि इस क्षेत्र में बहुत कुछ ज्ञात है, लेकिन अनेक पहलू अभी भी अज्ञात हैं और कई ऐसे आयाम हैं जो आगे अनुसंधान की माँग करते हैं। क्लार्क (1998) ने कॉर्पोरेट सामाजिक रिपोर्टिंग को एक नैतिक प्रथा के रूप में देखा, जबकि ग्रे इत्यादि (1996) ने सामाजिक और पर्यावरणीय रिपोर्टिंग में आए परिवर्तनों तथा उनसे जुड़ी जवाबदेही और वैधता संबंधी चुनौतियों की समीक्षा की।

लेपौतरे और हीने (2006) ने छोटे व्यवसायों की सामाजिक उत्तरदायित्व पर फर्म के आकार के प्रभाव की समालोचनात्मक समीक्षा की और यह तर्क प्रस्तुत किया कि आकार CSR के स्वरूप, गहराई और औपचारिकता को प्रभावित करता है। उनके अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि छोटे उद्यमों में सामाजिक उत्तरदायित्व अक्सर अधिक अनौपचारिक, संबंध-आधारित और स्वामी-प्रबंधक की व्यक्तिगत मूल्यों से संचालित हो सकता है, जबकि बड़े संगठनों में यह अधिक संरचित और नीति-आधारित रूप ले सकता है। ओदुरो इत्यादि (2024) ने एसएमई में CSR के संदर्भ में ज्ञात, अज्ञात और ज्ञात होने योग्य पहलुओं की व्यापक समीक्षा प्रस्तुत करते हुए इस क्षेत्र में चल रहे ज्ञान-अंतरालों को रेखांकित किया।

बेर्नियाक-वोज़्नी इत्यादि (2023) ने एसएमई में कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के व्यवसायिक आधार की जांच कर्मचारियों के दृष्टिकोण से की। इस अध्ययन से यह समझ मिलती है कि कर्मचारी CSR पहलों को केवल बाहरी छवि के रूप में नहीं, बल्कि कार्यस्थल के मूल्यों, संगठनात्मक प्रतिबद्धता और अपने स्वयं के प्रदर्शन अनुभव से भी जोड़ते हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि CSR की प्रभावशीलता केवल प्रबंधन के इरादों पर नहीं, बल्कि कर्मचारियों की धारणा और भागीदारी पर भी निर्भर करती है।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

रॉबर्ट्स इत्यादि (2006) ने एसएमई के कॉर्पोरेट उत्तरदायित्व प्रदर्शन में क्षेत्रीय स्तर पर सुधार के तरीकों की पहचान की, जिसमें "Responsibility Northwest" पहल से महत्वपूर्ण सबक सामने आए। इस अध्ययन का मुख्य निष्कर्ष यह है कि क्षेत्रीय सहयोग, नेटवर्किंग और साझेदारी के माध्यम से छोटे उद्यमों को CSR प्रथाओं को अपनाने में सहायता दी जा सकती है। इस प्रकार, एसएमई में कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास केवल आंतरिक संसाधनों का प्रश्न नहीं है, बल्कि क्षेत्रीय समर्थन, संस्थागत वातावरण और सामूहिक सीख का भी परिणाम है।

6 पर्यावरणीय रणनीति, प्रतिस्पर्धात्मक लाभ और हरित नवाचार

बंसल और रोथ (2000) ने कंपनियों के हरित बनने के कारणों की जांच करते हुए पारिस्थितिक अनुक्रियाशीलता का एक मॉडल प्रस्तुत किया, जिसमें प्रतिस्पर्धात्मकता, वैधता और पारिस्थितिक उत्तरदायित्व को प्रमुख प्रेरक माना गया। पोर्टर और वैन डेर लिंडे (1995) ने यह तर्क दिया कि पर्यावरणीय दक्षता और प्रतिस्पर्धात्मकता एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हो सकते हैं, क्योंकि उचित पर्यावरणीय मानक नवाचार को प्रोत्साहित कर सकते हैं और संसाधन उत्पादकता बढ़ा सकते हैं। ली (2000) ने पर्यावरण युग में सतत उद्यम की ओर रणनीतिक कॉर्पोरेट परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया, जबकि रॉबिन्स (2001) ने निगमों को हरित बनाने की प्रक्रिया का विश्लेषण किया। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरणीय उत्तरदायित्व केवल अनुपालन का विषय नहीं, बल्कि रणनीतिक परिवर्तन और दीर्घकालिक प्रतिस्पर्धात्मकता से जुड़ा प्रश्न है.

हार्ट (1995) के प्राकृतिक संसाधन-आधारित दृष्टिकोण पर आधारित होकर हॉफमान इत्यादि (2012) ने यह दिखाया कि फर्म की क्षमताएँ पर्यावरणीय प्रबंधन और सततता प्रथाओं के प्रमुख प्रेरक हैं, विशेष रूप से लघु और मध्यम आकार के विनिर्माताओं में। अल्बीनो इत्यादि (2009) ने पर्यावरणीय रणनीतियों और हरित उत्पाद विकास की समीक्षा करते हुए सततता-संचालित कंपनियों की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया। इन कार्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि जब संगठनों के भीतर ज्ञान, संसाधन और रणनीतिक दिशा मौजूद होती है, तब पर्यावरणीय प्रबंधन अधिक प्रभावी और नवोन्मेषी बन सकता है.

को और लियू (2017) ने पर्यावरणीय रणनीति और प्रतिस्पर्धात्मक लाभ के बीच संबंधों की जांच करते हुए एसएमई की गतिशील क्षमताओं की भूमिका पर बल दिया। जिआंग इत्यादि (2018) ने फर्म प्रदर्शन बढ़ाने के लिए हरित उद्यमशीलता अभिविन्यास को गतिशील क्षमता दृष्टिकोण से समझा, जबकि लियोनिदू इत्यादि (2017) ने लघु फर्मों की हरित व्यवसाय रणनीति के आंतरिक प्रेरकों और प्रदर्शन परिणामों को रेखांकित किया। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरणीय रणनीति तभी प्रभावी होती है जब संगठन उसे केवल नीति के रूप में नहीं, बल्कि सीखने, अनुकूलन और प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त के साधन के रूप में अपनाएँ.

अबोएल्मागेद और हाशेम (2019) ने एसएमई में अवशोषण क्षमता और हरित नवाचार के अपनाने के बीच संबंधों की जांच की तथा सतत संगठनात्मक क्षमताओं की मध्यस्थ भूमिका को महत्त्वपूर्ण पाया। यह दर्शाता है कि बाहरी ज्ञान को आत्मसात करने की क्षमता हरित नवाचार को केवल संभव ही नहीं बनाती, बल्कि उसे संस्थागत रूप भी देती है। मैकफ़र्सन और विल्सन (2003) ने आपूर्ति शृंखला संबंधों में एसएमई की क्षमता बढ़ाने के अवसरों की पहचान की, जिससे यह संकेत मिलता है कि सहयोगात्मक नेटवर्क छोटे उद्यमों को अधिक सक्षम बनाते हैं.

ली इत्यादि (2017) ने पर्यावरणीय सततता के आपूर्ति-पक्ष और निर्यात प्रदर्शन के बीच संबंधों की जांच की, जिसमें ज्ञान एकीकरण और अंतर्राष्ट्रीय खरीदार की भागीदारी को निर्णायक बताया गया। इससे यह स्पष्ट होता

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

है कि पर्यावरणीय सततता केवल घरेलू संचालन तक सीमित नहीं है, बल्कि निर्यात-उन्मुख प्रतिस्पर्धा और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में भी प्रदर्शन को प्रभावित करती है। समग्र रूप से, यह साहित्य बताता है कि हरित रणनीतियाँ, संगठनात्मक क्षमताएँ, ज्ञान-संयोजन और आपूर्ति श्रृंखला सहयोग मिलकर एसएमई की पर्यावरणीय और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को मजबूत करते हैं.

7 नेतृत्व, हरित मानव संसाधन प्रबंधन और संगठनात्मक प्रतिबद्धता

पार्क इत्यादि (2014) ने होटल कंपनियों में शीर्ष प्रबंधन के पर्यावरणीय दृष्टिकोणों के प्रभाव की जांच की और यह स्पष्ट किया कि नेतृत्व की पर्यावरणीय सोच संगठन की हरित प्रथाओं को सीधे आकार देती है। ओजो और फौज़ी (2020) ने आईटी पेशेवरों के हरित आईटी प्रथाओं में संलग्न होने के निर्धारक के रूप में पर्यावरणीय जागरूकता और नेतृत्व प्रतिबद्धता को महत्वपूर्ण पाया। इन अध्ययनों से यह संकेत मिलता है कि जब नेतृत्व पर्यावरणीय मुद्दों को प्राथमिकता देता है, तब संगठनात्मक व्यवहार भी उसी दिशा में बदलता है.

दर्विशमोतेवाली और अल्तिनाय (2022) ने हरित मानव संसाधन प्रबंधन, पर्यावरणीय जागरूकता और हरित व्यवहार के बीच संबंधों की जांच की तथा सेवक नेतृत्व की अनुशीलन भूमिका पर बल दिया। मुनीर और ग़ानी (2024) ने अनुयायियों की हरित जागरूकता के नेता की हरित संगठनात्मक प्रतिबद्धता पर प्रभाव का अध्ययन करते हुए अनुशीलन और मध्यस्थ प्रभावों को रेखांकित किया। इन निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि नेतृत्व और अनुयायी दोनों की हरित चेतना संगठन में पर्यावरणीय प्रतिबद्धता को मजबूत करती है.

चान इत्यादि (2014) ने होटलों में कर्मचारियों की हरित प्रथाओं को लागू करने की अभिप्राय के प्रेरकों की पहचान की, जिसमें ज्ञान, जागरूकता, चिंता और पारिस्थितिक व्यवहार को महत्त्वपूर्ण घटक बताया गया। फ़ॉस्टर इत्यादि (2022) ने कार्यस्थल में पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार के निर्धारकों की व्यापक पहचान की, जबकि युस्लिज़ा इत्यादि (2020) ने मलेशिया में पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार और सतत विकास के संबंधों की जांच की। युस्लिज़ा इत्यादि (2021) ने कार्यस्थल में पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार के मॉडलिंग पर प्रारंभिक अध्ययन प्रस्तुत किया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि व्यक्तिगत विश्वास, आत्म-प्रभावशीलता और संगठनात्मक संदर्भ इस व्यवहार के प्रमुख निर्धारक हैं.

मतीन इत्यादि (2023) ने स्वास्थ्य सेवा संगठनों में पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार को बढ़ावा देने वाले मनोवैज्ञानिक और रणनीतिक कारकों का अनुभवजन्य विश्लेषण किया। सैफुलिना इत्यादि (2023) ने कर्मचारियों के स्वैच्छिक पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार पर व्यक्तिगत पर्यावरणीय जागरूकता और पर्यावरणीय चिंता के प्रभाव की मध्यस्थ विश्लेषण उभरती अर्थव्यवस्थाओं में की। ब्लॉक इत्यादि (2015) ने विश्वविद्यालय कर्मचारियों के पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार पर सर्वेक्षण प्रस्तुत किया, जबकि चुंग इत्यादि (2019) ने चीनी समाज में कर्मचारियों के पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार में योगदान के कारणों की जांच करते हुए बहुलवादी अज्ञानता की भूमिका पर बल दिया। इन अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि जागरूकता, भावना, सामाजिक धारणाएँ और नेतृत्व मिलकर कार्यस्थल के पर्यावरणीय व्यवहार को दिशा देते हैं.

8 पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार: व्यक्ति, उपभोक्ता, विद्यार्थी और समुदाय

वैन लियर और डनलैप (1980) ने पर्यावरणीय चिंता के सामाजिक आधार की व्यापक समीक्षा करते हुए यह दिखाया कि आयु, लिंग, शिक्षा, सामाजिक स्थिति और निवास-परिस्थिति जैसे सामाजिक-जनसांख्यिकीय कारक पर्यावरणीय चिंता को प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन आगे के शोध के लिए एक आधारभूत संदर्भ बना, क्योंकि इसने पर्यावरणीय चिंता को केवल व्यक्तिगत भावना नहीं, बल्कि सामाजिक संरचनाओं से भी जुड़ी हुई परिघटना के रूप में समझने का मार्ग प्रशस्त किया.

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

गिफ़र्ड और निल्सन (2014) ने पर्यावरणीय चिंता और पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार को प्रभावित करने वाले व्यक्तिगत तथा सामाजिक कारकों की समीक्षा की। उन्होंने यह रेखांकित किया कि ज्ञान, मूल्य, नियंत्रण की भावना, जीवन-अनुभव, सामाजिक मानदंड और सांस्कृतिक संदर्भ इस व्यवहार को आकार देते हैं। लार्सन इत्यादि (1981) ने पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार में भागीदारी की जांच की, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि चिंता और वास्तविक सहभागिता के बीच संबंध हमेशा सीधा नहीं होता.

ताम और चान (2017) ने क्रॉस-सांस्कृतिक दृष्टिकोण से यह पाया कि कुछ समाजों में पर्यावरणीय चिंता और पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार के बीच संबंध अपेक्षाकृत कमजोर होता है। ताम और चान (2018) ने आगे दिखाया कि सामान्यीकृत विश्वास इस अंतर को कम कर सकता है, अर्थात जहाँ सामाजिक भरोसा अधिक होता है, वहाँ चिंता व्यवहार में बदलने की संभावना भी बढ़ती है। कुलिन और योहान्सन सेव़ा (2021) ने क्रॉस-नेशनल अध्ययन में सरकार की गुणवत्ता को एक महत्त्वपूर्ण संदर्भीय कारक के रूप में पहचाना, जो पर्यावरणीय चिंता और पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार के संबंध को प्रभावित करता है.

लाउ और ली (2023) के पूर्व-पंजीकृत मेटा-विश्लेषण से यह संकेत मिला कि पर्यावरणीय चिंता सार्वजनिक पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार पर निजी व्यवहार की तुलना में अधिक प्रभाव डालती है। वूर्ट्ज़ (2015) ने पर्यावरणीय चिंता से जुड़े व्यक्तित्व लक्षणों की जांच की, जबकि वांग इत्यादि (2021) ने जैवमंडलीय मूल्यों और पर्यावरणीय पहचान की भूमिका पर बल दिया। हॉफ्मन इत्यादि (2022) ने लिंग और समय-दृष्टिकोणों के प्रभाव को रेखांकित किया, और बिंडर इत्यादि (2020) ने अच्छे जीवन की भिन्न धारणाओं के कल्याण पर असमान प्रभाव का विश्लेषण किया.[

होल्बर्ट इत्यादि (2003) ने पर्यावरणीय चिंता, टेलीविज़न देखने के पैटर्न और पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार के बीच संबंध की जांच करते हुए मीडिया प्रभाव को महत्त्वपूर्ण माना। मिनेलगैते और लियोबिकिएने (2021) ने लिथुआनिया जैसे संक्रमणकालीन देश में लंबे समय के भीतर पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार और उसके निर्धारकों में बदलाव का अध्ययन किया। मार्कल (2013) ने पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार स्केल विकसित कर यह प्रश्न उठाया कि व्यवहार को मापने का तरीका उसके निष्कर्षों को कैसे प्रभावित करता है.

उपभोक्ता और विद्यार्थियों से संबंधित अध्ययनों में भी यही पैटर्न दिखाई देता है कि पर्यावरणीय चेतना हमेशा वास्तविक व्यवहार में परिवर्तित नहीं होती। अब्दुल-मुह्मिन (2007), हुआंग इत्यादि (2014), और किम व ली (2023) ने खरीद अभिप्राय, पर्यावरणीय चेतना, वास्तविक खरीद और परिस्थितिजन्य संदर्भ के अनुशीलन प्रभावों की जांच की। करामी इत्यादि (2021) तथा ज़ेंग इत्यादि (2023) ने योजनाबद्ध व्यवहार, पर्यावरणीय ज्ञान और जोखिम धारणा के माध्यम से सतत उपभोग व्यवहार की व्याख्या की। विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययनों में देवी और दियन (2018), चक्रवर्ती इत्यादि (2017), फ़दज़िल इत्यादि (2021), हांदोयो इत्यादि (2021), हार्डिंग इत्यादि (2018), वांग इत्यादि (2022), वास्कॉन्सेलोस इत्यादि (2021), और थोंधलाना तथा ह्लाश्वायो (2018) ने अलग-अलग संदर्भों में यह दिखाया कि जागरूकता, लक्ष्य-फ्रेम, बाधाएँ, सामाजिक संदर्भ और संस्थागत वातावरण पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार को प्रभावित करते हैं.

अन्य सामाजिक-व्यवहारिक अध्ययनों में एज़े (2020), एस्पिना (2018), श्रीनिवासन और बोरकर (2021), ग्बेरेव्बी इत्यादि (2021), मिश्रा और दास (2015), तथा पासेक और म्यत्स्क (2022) ने विद्यालय, उच्च शिक्षा, परिवार और प्रशिक्षण जैसे कारकों की भूमिका को रेखांकित किया। जंग और चो (2015) ने किशोरों के पर्यावरणीय अनुभव और उपभोग व्यवहार के बीच संबंध की जांच की, जबकि शिउ इत्यादि (2019) ने ताइवान के युवा बालकों और विद्यार्थियों की पर्यावरणीय चेतना का अध्ययन किया। स्टील (1996), रे और

हॉल (1995), एंडर्सन और बेटमैन (1997), तथा अब्राहम इत्यादि (2015) ने सामाजिक सक्रियता, निंदकता, और आत्म-प्रभाकता की भूमिका पर ध्यान दिया। बेगम इत्यादि (2021), अमान इत्यादि (2023), चुक्कूओरजी इत्यादि (2017), ओल्ली और वोल्लेबैक (2001), रांटोनन (2009), सेह्रा (2005), यांग (2005), और सी इत्यादि (2022) के अध्ययन मिलकर यह दर्शाते हैं कि पर्यावरणीय चिंता और पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार सामाजिक संबंधों, धार्मिकता, प्रकृति-अनुभव, आवास-परिवेश और सामाजिक पूंजी से गहराई से जुड़े हैं.

9 संसाधन सीमाएं और विकासशील अर्थव्यवस्थाएं

OECD (2020) के आंकड़े यह दिखाते हैं कि उद्यमों को आकार के आधार पर वर्गीकृत करना नीति और प्रदर्शन विश्लेषण के लिए उपयोगी है, और एसएमई की आर्थिक भूमिका को समझने में यह एक महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करता है. डीगन (2007) ने ऑस्ट्रेलियाई वित्तीय लेखांकन के संदर्भ में एसएमई की स्थिति की समीक्षा की, जबकि बेक (2007) ने विकासशील देशों में एसएमई की वित्तीय बाधाओं, उनके निर्धारकों और संभावित समाधानों का विश्लेषण किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि पूंजी की कमी एसएमई के पर्यावरणीय प्रबंधन अपनाने में भी एक बड़ी रुकावट है. न्दियाये इत्यादि (2018) ने उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में एसएमई के प्रदर्शन को स्पष्ट करते हुए यह दिखाया कि वित्त, तकनीक, नवाचार, नियमन और कार्यबल जैसे कारक छोटे उद्यमों के प्रदर्शन को अलग-अलग स्तरों पर प्रभावित करते हैं. ली इत्यादि (2017), मूसा और चिन्नियाह (2016), तथा पियाथनावोंग इत्यादि (2019) के अध्ययनों से यह भी संकेत मिलता है कि पर्यावरणीय सततता, हरित परिवर्तन और परिचालन सुधार प्रतिस्पर्धात्मक प्रदर्शन से जुड़े हुए हैं.

आर्मस्ट्रॉन्ग और ओवर्टन (1977) ने डाक सर्वेक्षणों में अनुत्तरदायी पूर्वाग्रह का अनुमान लगाने की विधि प्रस्तावित की, जो आज भी सर्वेक्षण-आधारित शोध में नमूना वैधता परखने के लिए उपयोगी है. फ़ॉरनेल और लार्कर (1981) ने अप्रेक्षित चरों और मापन त्रुटियों वाले संरचनात्मक समीकरण मॉडलों के मूल्यांकन के लिए मानदंड विकसित किए, जबकि ब्राउन और क्यूडेक (1993) ने मॉडल फिट के वैकल्पिक मूल्यांकन तरीकों पर बल दिया. हेयर इत्यादि (2006) का बहुविध आंकड़ा विश्लेषण पर कार्य संरचनात्मक समीकरण मॉडलिंग और पुष्टिकारक कारक विश्लेषण के लिए एक मानक संदर्भ बन गया है. पोड्साकॉफ इत्यादि (2003) ने सामान्य विधि पूर्वाग्रह की समालोचनात्मक समीक्षा करते हुए इसके नियंत्रण के उपाय सुझाए, जो स्व-रिपोर्ट आधारित व्यवहारिक अनुसंधान की वैधता के लिए आवश्यक हैं.

हेयज़ (2012) ने मध्यस्थ, अनुशीलन और सशर्त प्रक्रिया विश्लेषण के लिए एक व्यापक कम्प्यूटेशनल ढांचा प्रस्तुत किया, जिससे इन जटिल संबंधों की जाँच अधिक सुलभ हो गई. इस प्रकार, यदि आपका शोध एसएमई के पर्यावरणीय प्रबंधन, हरित व्यवहार, CSR, या सततता पर आधारित है, तो ये स्रोत न केवल सैद्धांतिक पृष्ठभूमि देते हैं बल्कि शोध-डिज़ाइन, मापन वैधता, और परिकल्पना-परीक्षण की पद्धतिगत मजबूती भी प्रदान करते हैं.

10 निष्कर्ष

यह विषयगत समीक्षा शोध पत्रों के व्यवस्थित विश्लेषण पर आधारित है और एसएमई में पर्यावरणीय प्रबंधन, कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व, पर्यावरणीय रणनीति, प्रतिस्पर्धात्मक लाभ, हरित मानव संसाधन प्रबंधन, नेतृत्व तथा विभिन्न संदर्भों में पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार को एक समग्र दृष्टि से समझने का प्रयास करती है। उपलब्ध साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि एसएमई में पर्यावरणीय प्रबंधन केवल नियामकीय अनुपालन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संसाधन उपलब्धता, प्रबंधकीय दृष्टिकोण, संगठनात्मक सीख और बाह्य हितधारक दबावों के सम्मिलित प्रभाव से निर्मित होता है। हिलरी (1999), गेरस्टेन्फेल्ड और रॉबर्ट्स (2000), तथा

विलियमसन इत्यादि (2006) के कार्य इस बात को पुष्ट करते हैं कि छोटे उद्यमों के सामने वित्तीय, ज्ञान-संबंधी और संरचनात्मक सीमाएँ होती हैं, फिर भी उपयुक्त प्रबंधन समर्थन और सीखने की क्षमता के साथ वे पर्यावरणीय प्रथाओं को अपनाने में आगे बढ़ सकते हैं।

साथ ही, साहित्य यह भी दर्शाता है कि पर्यावरणीय रणनीति और प्रतिस्पर्धात्मक लाभ के बीच सकारात्मक संबंध मौजूद है। पोर्टर और वैन डेर लिंडे (1995), बंसल और रोथ (2000), तथा को और लियू (2017) के अध्ययन इस विचार को सुदृढ़ करते हैं कि पर्यावरणीय प्रबंधन को लागत के बजाय नवाचार, संसाधन दक्षता और दीर्घकालिक प्रतिस्पर्धा के अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए। इसी प्रकार, नेतृत्व और हरित मानव संसाधन प्रबंधन की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण पाई गई है, क्योंकि पार्क इत्यादि (2014) और दर्विशमोतेवाली और अल्तिनाय (2022) जैसे अध्ययनों से यह संकेत मिलता है कि शीर्ष प्रबंधन की प्रतिबद्धता और संगठनात्मक मानव संसाधन नीतियाँ हरित व्यवहार और पर्यावरणीय प्रदर्शन को गहराई से प्रभावित करती हैं। इसका अर्थ यह है कि संगठनात्मक परिवर्तन केवल नीति-स्तर पर नहीं, बल्कि नेतृत्व-स्तर और मानव संसाधन-स्तर पर भी संचालित होता है।

व्यक्तिगत स्तर पर पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार अनेक मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारकों से प्रभावित होता है। गिफ़र्ड और निल्सन (2014), ताम और चान (2017), तथा वांग इत्यादि (2021) के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि पर्यावरणीय चिंता, जागरूकता, ज्ञान, सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ, पहचान और व्यक्तित्व लक्षण इस व्यवहार को आकार देते हैं। तथापि, जागरूकता और वास्तविक व्यवहार के बीच का अंतर एक सतत चुनौती बना हुआ है, जैसा कि मेर्गेलमेयर (2019) और अब्राहम इत्यादि (2015) के अध्ययनों से स्पष्ट होता है। इसलिए भविष्य के अनुसंधान को विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में एसएमई पर अधिक केंद्रित होना चाहिए, व्यक्तिगत और संगठनात्मक स्तरों को जोड़ने वाले एकीकृत मॉडल विकसित करने चाहिए, तथा दीर्घकालिक शोध-डिज़ाइन अपनाकर यह समझना चाहिए कि जागरूकता को व्यवहार में कैसे रूपांतरित किया जा सकता है। साथ ही, शोध की विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए सामान्य विधि पूर्वाग्रह और अनुत्तरदायी पूर्वाग्रह के प्रति सतर्क रहना भी आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1 अकट, बी., एंड बी. जीनो. (2000). ग्रीनिंग स्मॉल एंड मीडियम-साइज़्ड एंटरप्राइज़ेज़ इन क्वीनज़लैंड: चैलेंजेज़ फ़ॉर मैनेजमेंट. पेपर प्रेज़ेन्टेड ऐट ऑस्ट्रेलियन न्यूज़ीलैंड अकैडमी ऑफ मैनेजमेंट ऐन्युअल कॉन्फ़रेंस, सिडनी.

2 अजज़ेन, आई., एंड एम. फ़िशबीन. (1980). अंडरस्टैंडिंग एटिट्यूड्स एंड प्रिडिक्टिंग सोशल बिहेवियर. एंगलवुड क्लिफ़्स: प्रेन्टिस हॉल.

3 आंडर्सन, एल. एम., एंड टी. एस. बेटमैन. (1997). सिनिसिज़्म इन द वर्कप्लेस: सम कॉज़ेज़ एंड इफेक्ट्स. जर्नल ऑफ ऑर्गनाइज़ेशनल बिहेवियर, 18, 449–469. https://doi.org/10.1002/(SICI)1099-1379(199709)18:5<449: AID-JOB808>3.0.CO;2-O

4 आर्मस्ट्रॉन्ग, जे. एस., एंड एस. टी. ओवर्टन. (1977). एस्टिमेटिंग नॉनरिस्पॉन्स बायस इन मेल सर्वेइज़. जर्नल ऑफ मार्केटिंग रिसर्च, 14, 396–402. https://doi.org/10.2307/3150783

5 ऑस्ट्रेलियन ब्यूरो ऑफ स्टैटिस्टिक्स (एबीएस). (2003). स्मॉल बिज़नेस इन ऑस्ट्रेलिया, कैट. नं. 1301.0. एबीएस, कैनबरा.

6 बंसल, पी., एंड के. रोथ. (2000). व्हाई कंपनीज़ गो ग्रीन: ए मॉडल ऑफ इकोलॉजिकल रिस्पॉन्सिवनेस. अकैडमी ऑफ मैनेजमेंट जर्नल, 43(4), 717–736. https://doi.org/10.2307/1556363

7 बियोंदी, वी., एम. फ्रे, एंड एफ. इराल्दो. (2000). इन्वायर्नमेंटल मैनेजमेंट सिस्टम्स एंड एसएमईज़. ग्रीनर मैनेजमेंट इंटरनेशनल, स्प्रिंग, 55–79.

8 ब्राउन, एम. डब्ल्यू., एंड आर. क्यूडेक. (1993). अल्टरनेटिव वेज़ ऑफ असेसिंग मॉडल फ़िट. इन के. ए. बोलन एंड जे. एस. लॉंग (एड्स.), टेस्टिंग स्ट्रक्चरल इक्वेशन मॉडल्स (pp. 136–162). न्यूबरी पार्क, सीए: सेज.

9 बुबना-लिटिक, के., एंड एल. डे ल्यू. (1999). एडिंग द ग्रीन एडवांटेज: ए सर्वे ऑफ ऑस्ट्रेलियन एसएमईज़. पेपर प्रेज़ेन्टेड ऐट इकोबिज 99, द बिज़नेस एंड द इन्वायर्नमेंट कॉन्फ़रेंस, सिडनी.

10 क्लार्क, जे. (1998). कॉरपोरेट सोशल रिपोर्टिंग: एन एथिकल प्रैक्टिस. इन ब्लेक, जे., एंड गौथॉरप, सी. (एड्स.), एथिकल इशूज़ इन अकाउंटिंग (राउटलिज, लंदन एंड न्यूयॉर्क), pp. 184–199.

11 डिगन, सी. (2007). ऑस्ट्रेलियन फ़ाइनेंशियल अकाउंटिंग (3rd एड.). मैकग्रा-हिल, रोज़विल.

12 डिल्ट्स, जे. सी., एंड जी. ई. प्रौघ. (1989). स्ट्रैटेजिक ऑप्शन्स फ़ॉर इन्वायर्नमेंटल मैनेजमेंट: ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ स्मॉल वर्सेस लार्ज एंटरप्राइज़ेज़. जर्नल ऑफ स्मॉल बिज़नेस मैनेजमेंट, 27(3), 31–39.

13 फ़ॉरनेल, सी., एंड डी. लार्कर. (1981). इवैल्युएटिंग स्ट्रक्चरल इक्वेशन्स मॉडल्स विद नॉब्ज़र्वेबल वैरिएबल्स विद मेज़रमेंट एरर्स. जर्नल ऑफ मार्केटिंग रिसर्च, 18, 39–50. https://doi.org/10.2307/3151312

14 फ्राइडमैन, ए. एल., एस. माइल्स, एंड सी. एडम्स. (2000). स्मॉल एंड मीडियम-साइज़्ड एंटरप्राइज़ेज़ एंड द इन्वायर्नमेंट: इवैल्युएशन ऑफ ए स्पेसिफ़िक इनिशिएटिव एम्ड ऐट ऑल स्मॉल एंड मीडियम-साइज़्ड एंटरप्राइज़ेज़. जर्नल ऑफ स्मॉल बिज़नेस एंड एंटरप्राइज़ डेवलपमेंट, 7(4), 325–342. https://doi.org/10.1108/EUM0000000006849

15 गेरंस, पी. ए., एंड डब्ल्यू. ई. हचिन्सन. (2000). सस्टेनेबल डेवलपमेंट एंड स्मॉल एंड मीडियम-साइज़्ड एंटरप्राइज़ेज़: ए लॉन्ग वे टू गो. इन आर. हिलरी (एड.), स्मॉल एंड मीडियम-साइज़्ड एंटरप्राइज़ेज़ एंड द इन्वायर्नमेंट: बिज़नेस इम्पेरेटिव्स (ग्रीनलीफ़ पब्लिशिंग, शेफ़ील्ड, यूके), pp. 75–81.

16 गेरस्टेन्फेल्ड, ए., एंड एच. रॉबर्ट्स. (2000). साइज मैटर्स: बैरियर्स एंड प्रॉस्पेक्ट्स फ़ॉर इन्वायर्नमेंटल मैनेजमेंट इन स्मॉल, मीडियम-साइज़्ड एंटरप्राइज़ेज़. इन आर. हिलरी (एड.), स्मॉल एंड मीडियम-साइज़्ड एंटरप्राइज़ेज़ एंड द इन्वायर्नमेंट: बिज़नेस इम्पेरेटिव्स (ग्रीनलीफ़ पब्लिशिंग, शेफ़ील्ड, यूके), pp. 106–118.

17 ग्रे, आर., डी. ओवेन, एंड सी. एडम्स. (1996). अकाउंटिंग एंड अकाउंटेबिलिटी: चेंजेज़ एंड चैलेंजेज़ इन कॉरपोरेट सोशल एंड इन्वायर्नमेंटल रिपोर्टिंग. लंदन: प्रेन्टिस-हॉल.

18 ग्राउंडवर्क. (1995). स्मॉल फ़र्म्स एंड द इन्वायर्नमेंट: ए ग्राउंडवर्क स्टेटस रिपोर्ट. ग्राउंडवर्क, बर्मिंघम.

19 हेयर, जे. एफ., डब्ल्यू. सी. ब्लैक, बी. जे. बैबिन, आर. ई. एंडरसन, एंड आर. एल. टैथम. (2006). मल्टीवेरिएट डेटा एनालिसिस (6th एड.). पियरसन/प्रेन्टिस-हॉल, एंगलवुड क्लिफ़्स, एनजे.

20 हिलरी, आर. (1999). इवैल्युएशन ऑफ स्टडी रिपोर्ट्स ऑन द बैरियर्स, अपॉर्च्युनिटीज़ एंड ड्राइवर्स फ़ॉर स्मॉल एंड मीडियम-साइज़्ड एंटरप्राइज़ेज़ इन द अडॉप्शन ऑफ इन्वायर्नमेंटल मैनेजमेंट सिस्टम्स. रिपोर्ट सबमिटेड टू डिपार्टमेंट ऑफ ट्रेड एंड इंडस्ट्री एन्वायर्नमेंट डायरेक्टोरेट ऑन 5 अक्टूबर 1999, लंदन.

21 ली, के. (2000). स्ट्रैटेजिक कॉरपोरेट चेंज टुवर्ड्स सस्टेनेबल एंटरप्राइज़ इन द इन्वायर्नमेंट एरा. प्रोसीडिंग्स ऑफ द बिज़नेस स्ट्रैटेजी एंड इन्वायर्नमेंट कॉन्फ़्रेंस (यूरोपियन रिसर्च प्रेस, शिप्ली), pp. 271–278.

22 लेपौतरे, जे., एंड ए. हीने. (2006). इन्वेस्टिगेटिंग द इम्पैक्ट ऑफ फ़र्म साइज ऑन स्मॉल बिज़नेस सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी: ए क्रिटिकल रिव्यू. जर्नल ऑफ बिज़नेस एथिक्स, 67, 257–273. https://doi.org/10.1007/s10551-006-9183-5

23 मैकफ़र्सन, ए., एंड ए. विल्सन. (2003). एन्हांसिंग एसएमईज़' केपे बिलिटी: अपॉर्च्युनिटीज़ इन सप्लाई चेन रिलेशनशिप्स? जर्नल ऑफ स्मॉल बिज़नेस एंड एंटरप्राइज़ डेवलपमेंट, 10(2), 167–179. https://doi.org/10.1108/14626000310473193

24 मिचेल, आर. के., बी. आर. एगल, एंड डी. जे. वुड. (1997). टुवर्ड ए थ्योरी ऑफ स्टेकहोल्डर आइडेंटिफिकेशन एंड सैलियन्स: डेफाइनिंग द प्रिंसिपल ऑफ हू ऑर व्हाट रियली काउंट्स. अकैडमी ऑफ मैनेजमेंट रिव्यू, 22(4), 853–886. https://doi.org/10.2307/259247

25 मॉयर, एल. (2001). व्हाट डू वी मीन बाय कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी? कॉरपोरेट गवर्नेंस, 1(2), 16–22. https://doi.org/10.1108/EUM0000000005486

26 नैफज़िगर, डी. एन. ए., एंड आर. मोंटैग्रो. (2003). परसेप्शन्स ऑफ इन्वायर्नमेंटल कॉन्शसनेस इन यूएस स्मॉल बिज़नेसिज़: एन एम्पिरिकल स्टडी. एस.ए.एम. एडवांस्ड मैनेजमेंट जर्नल, 68(2), 23–32.

27 नेदरवुड, ए. (1998). इन्वायर्नमेंटल मैनेजमेंट सिस्टम्स. इन आर. वेल्फ़र्ड (एड.), कॉरपोरेट इन्वायर्नमेंटल मैनेजमेंट: सिस्टम्स एंड स्ट्रैटेजीज़ (2nd एड.), pp. 37–60. अर्थस्कैन, लंदन.

28 ओल्ली, ई. जी. जी., एंड डी. वोल्लेबैक. (2001). कॉरिलेट्स ऑफ इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर्स: ब्रिंगिंग बैक सोशल कॉन्टेक्स्ट. एन्वायर्नमेंट एंड बिहेवियर, 33(3), 181–208.

29 पामर, जे., एंड एल. एंड्रूज़. (1997). टीम-वर्क टू ग्रीन स्मॉल एंड मीडियम-साइज़ एंटरप्राइज़? टीम परफ़ॉरमेंस मैनेजमेंट, 3(3), 193–205. https://doi.org/10.1108/13527599710186970

30 पैरी, पी. (2001). न्यू मिलेनियम मे usher इन न्यू डे फ़ॉर ISO 14001. ऑनलाइन व्यूड 4 नवम्बर 2003, http://www.businessstandards.com/content/16ftr3.asp

31 पीटर्स, एम., एंड आर. के. टर्नर. (2002). एसएमई इन्वायर्नमेंटल एटिट्यूड्स एंड पार्टिसिपेशन इन लोकल-स्केल वॉलन्टरी इनिशिएटिव्स: सम प्रैक्टिकल एप्लिकेशन्स. सीज़रज वर्किंग पेपर ECM 02-03.

32 पेट्स, जे., ए. हर्ड, एंड एम. ओ'हेओचा. (1998). इन्वायर्नमेंटल रिस्पॉन्सिवनेस, इंडिविजुअल्स एंड ऑर्गनाइजेशनल लर्निंग: एसएमई एक्सपीरियंस. जर्नल ऑफ एन्वायर्नमेंटल प्लानिंग एंड मैनेजमेंट, 41(6), 711–731. https://doi.org/10.1080/09640569811380

33 पोड्साकॉफ, पी. एम., एस. बी. मैकेंज़ी, जे.-वाई. ली, एंड एन. पी. पोड्साकॉफ. (2003). कॉमन मेथड बायसेज़ इन बिहेवियरल रिसर्च: ए क्रिटिकल रिव्यू ऑफ द लिटरेचर एंड रिकमेंडेड रेमेडीज़. जर्नल ऑफ अप्लाइड साइकोलॉजी, 88(5), 879–903. https://doi.org/10.1037/0021-9010.88.5.879

34 पोर्टर, एम., एंड सी. वैन डेर लिंडे. (1995). ग्रीन एंड कॉम्पेटिटिव: एंडिंग द स्टेलमेट. हार्वर्ड बिज़नेस रिव्यू, 73(5), 120–134.

35 प्रेटर, ई., एंड एस. घोष. (2005). करंट ऑपरेशनल प्रैक्टिसेज़ ऑफ यू.एस. स्मॉल एंड मीडियम-साइज़्ड एंटरप्राइज़ेज़ इन यूरोप. जर्नल ऑफ स्मॉल बिज़नेस मैनेजमेंट, 43(2), 155–169. https://doi.org/10.1111/j.1540-627x.2005.00131.x
36 रे, जे. जे., एंड जी. पी. हॉल. (1995). आर इन्वायर्नमेंटलिस्ट्स रेडिकल ऑर कंज़रवेटिव? सम ऑस्ट्रेलियन डेटा. जर्नल ऑफ सोशल साइकोलॉजी, 135(2), 225–229. https://doi.org/10.1080/00224545.1995.9711426
37 रॉबिन्स, पी. टी. (2001). ग्रीनिंग द कॉरपोरेशन. अर्थस्कैन पब्लिकेशन्स, लंदन, यूके.
38 रॉबर्ट्स, एस., आर. लॉसन, एंड जे. निकल्स. (2006). जेनेरेटिंग रीजनल-स्केल इम्प्रूवमेंट्स इन एसएमई कॉरपोरेट रिस्पॉन्सिबिलिटी परफ़ॉरमेंस: लेसन्स फ्रॉम रिस्पॉन्सिबिलिटी नॉर्थवेस्ट. जर्नल ऑफ बिज़नेस एथिक्स, 67, 275–286. https://doi.org/10.1007/s10551-006-9184-4
39 रोवे, जे., एंड डी. हॉलिंग्सवर्थ. (1996). इम्प्रूविंग इन्वायर्नमेंटल परफ़ॉरमेंस ऑफ एसएमईज़. इको-मैनेजमेंट एंड ऑडिटिंग, 3, 97–107. https://doi.org/10.1002/(SICI)1099-0925(199607)3:2<97::AID-EMA42>3.0.CO;2-L
40 रदरफोर्ड, आर., आर. ब्लैकबर्न, एंड एल. स्पेन्स. (2000). इन्वायर्नमेंटल मैनेजमेंट एंड द स्मॉल फ़र्म: एन इंटरनेशनल कम्पैरिजन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एंटरप्रेन्योरियल बिहेवियर एंड रिसर्च, 6(6), 310–325. https://doi.org/10.1108/13552550010362750
41 शेपर, एम. (2001). इन्वायर्नमेंटल एटिट्यूड्स एंड प्रैक्टिसेज़ अमंगस्ट स्मॉल बिज़नेस ओनर्स/मैनेजर्स इन द वेस्टर्न ऑस्ट्रेलियन कम्युनिटी फ़ार्मेसी सेक्टर. स्कूल ऑफ मैनेजमेंट वर्किंग पेपर नं. 2001:3, सितम्बर.
42 शेपर, एम. (2002). स्मॉल फ़र्म्स एंड इन्वायर्नमेंटल मैनेजमेंट: प्रिडिक्टर्स ऑफ ग्रीन परचेसिंग इन वेस्टर्न ऑस्ट्रेलियन फ़ार्मेसीज़. इंटरनेशनल स्मॉल बिज़नेस जर्नल, 20(3), 235–249. https://doi.org/10.1177/0266242602203001
43 सिम्पसन, एम., एन. टेलर, एंड के. बार्कर. (2004). इन्वायर्नमेंटल रिस्पॉन्सिबिलिटी इन एसएमईज़: डज़ इट डिलिवर कॉम्पेटिटिव एडवांटेज? बिज़नेस स्ट्रैटेजी एंड द इन्वायर्नमेंट, 13(3), 156–171. https://doi.org/10.1002/bse.398
44 स्टील, बी. एस. (1996). थिंकिंग ग्लोबली एंड एक्टिंग लोकली? इन्वायर्नमेंटल एटिट्यूड्स, बिहेवियर एंड एक्टिविज़्म. जर्नल ऑफ इन्वायर्नमेंटल मैनेजमेंट, 47, 27–36. https://doi.org/10.1006/jema.1996.0033
45 टेलर, डी. डब्ल्यू., एम. सुलैमान, एंड एम. शीहान. (2001). ऑडिटिंग ऑफ इन्वायर्नमेंटल मैनेजमेंट सिस्टम्स: ए लेजिटिमेसी थ्योरी परस्पेक्टिव. मैनेजेरियल ऑडिटिंग जर्नल, 16(7), 411–424. https://doi.org/10.1108/02686900110398331
46 टिली, एफ. जे. (1999). स्मॉल-फ़र्म इन्वायर्नमेंटल स्ट्रैटेजी: द यूके एक्सपीरियंस. ग्रीनर मैनेजमेंट इंटरनेशनल, स्प्रिंग, 1–14.
47 विलियमसन, डी., एंड जी. लिन्च-वूड. (2001). ए न्यू पैराडाइम फ़ॉर एसएमई इन्वायर्नमेंटल प्रैक्टिस. द टीक्यूएम मैगज़ीन, 13(6), 424–432. https://doi.org/10.1108/EUM0000000006179

48 विलियमसन, डी., जी. लिन्च-वूड, एंड जे. रैम्से. (2006). ड्राइवर्स ऑफ इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर इन मैन्युफैक्चरिंग एसएमईज़ एंड द इम्प्लिकेशंस फ़ॉर सीएसआर. जर्नल ऑफ बिज़नेस एथिक्स, 67, 317–330. https://doi.org/10.1007/s10551-006-9187-1

49 जुत्शी, ए., एंड ए. सोहल. (2002). इन्वायर्नमेंटल मैनेजमेंट सिस्टम अडॉप्शन बाय ऑस्ट्रेलेज़ियन ऑर्गनाइजेशन्स: पार्ट 1: रीजनज़, बेनिफिट्स एंड इम्पेडिमेंट्स. वर्किंग पेपर 44/02, मोनाश यूनिवर्सिटी.

50 ओईसीडी. (2020). एंटरप्राइज़ेस बाय बिज़नेस साइज. ओईसीडी डेटा. https://data.oecd.org/entrepreneur/enterprises-by-business-size.htm

51 नुल्कर, जी. (2014). एसएमईज़ एंड इन्वायर्नमेंटल परफ़ॉरमेंस: ए फ्रेमवर्क फ़ॉर ग्रीन बिज़नेस स्ट्रैटेजीज़. प्रोसीडिया – सोशल एंड बिहेवियरल साइंसेज़, 133, 130–140. https://doi.org/10.1016/j.sbspro.2014.04.177

52 ग्लाविच, पी., एंड लुकमान, आर. (2007). रिव्यू ऑफ सस्टेनेबिलिटी टर्म्स एंड देयर डेफिनिशन्स. जर्नल ऑफ क्लीनर प्रोडक्शन, 15(18), 1875–1885. https://doi.org/10.1016/j.jclepro.2006.12.006

53 ओदुरो, एस., ब्रूनो, एल., एंड माकारियो, जी. (2024). कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (सीएसआर) इन एसएमईज़: व्हाट वी नो, व्हाट वी डोंट नो, एंड व्हाट वी शुड नो. जर्नल ऑफ स्मॉल बिज़नेस एंड एंटरप्रेन्योरशिप, 36(2), 207–238. https://doi.org/10.1080/08276331.2021.1951064

54 बेर्नियाक-वोज़्नी, जे., क्वासेक, ए., गासिंस्की, एच., एंड कोलीग्स. (2023). बिज़नेस केस फ़ॉर कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी इन स्मॉल एंड मीडियम एंटरप्राइज़ेस—इम्प्लॉईज़ परस्पेक्टिव. सस्टेनेबिलिटी, 15(2), 1660. https://doi.org/10.3390/su15021660

55 दर्विशमोतेवाली, एम., एंड अल्तिनाय, एल. (2022). ग्रीन एचआरएम, इन्वायर्नमेंटल अवेयरनेस एंड ग्रीन बिहेवियर्स: द मॉडरेटिंग रोल ऑफ सर्वेंट लीडरशिप. टूरिज़्म मैनेजमेंट, 88, 104401. https://doi.org/10.1016/j.tourman.2021.104401

56 ओजो, ए. ओ., एंड फौज़ी, एम. ए. (2020). इन्वायर्नमेंटल अवेयरनेस एंड लीडरशिप कमिटमेंट ऐज़ डिटर्मिनेंट्स ऑफ आईटी प्रोफेशनल्स' एंगेजमेंट इन ग्रीन आईटी प्रैक्टिसेज़ फ़ॉर इन्वायर्नमेंटल परफ़ॉरमेंस. सस्टेनेबल प्रोडक्शन एंड कंजम्प्शन, 24, 298–307. https://doi.org/10.1016/j.spc.2020.07.017

57 गाडेन, डी. एल., केनेडी, जे., एंड मककीवर, सी. (2009). एन एम्पिरिकल स्टडी ऑफ इन्वायर्नमेंटल अवेयरनेस एंड प्रैक्टिसेज़ इन एसएमईज़. जर्नल ऑफ बिज़नेस एथिक्स, 84(1), 45–63. https://doi.org/10.1007/s10551-008-9672-9

58 हावर्ड-ग्रेनविल, जे. ए., नैश, जे., एंड कॉग्लियानेज़, सी. (2007). इंटरनल फैक्टर्स एंड देयर इन्फ्लुएंस ऑन कॉरपोरेट इन्वायर्नमेंटल डिसीज़न्स. लॉ एंड पॉलिसी, 30(1), 73–107.

59 बेक, टी. (2007). फ़ाइनेंसिंग कंस्ट्रेंट्स ऑफ एसएमईज़ इन डेवलपिंग कंट्रीज़: एविडेंस, डिटर्मिनेंट्स एंड सॉल्यूशन्स. फ़ाइनेंसिंग इनोवेशन-ओरिएंटेड बिज़नेसिज़ टू प्रमोट एंटरप्रेन्योरशिप, 1–35.

60 ली, ई. एल., झोउ, एल., एंड वू, ए. (2017). द सप्लाई-साइड ऑफ इन्वायर्नमेंटल सस्टेनेबिलिटी एंड एक्सपोर्ट परफ़ॉरमेंस: द रोल ऑफ नॉलेज इंटीग्रेशन एंड इंटरनेशनल बायर इन्वॉल्वमेंट. इंटरनेशनल बिज़नेस रिव्यू, 26(4), 724–735. https://doi.org/10.1016/j.ibusrev.2017.01.002

61 मुनीर, टी., एंड ग़ानी, यू. (2024). नैविगेटिंग द ग्रीन पाथ: अनरैवेलिंग द फॉलोअर ग्रीन अवेयरनेस इम्पैक्ट ऑन लीडर ग्रीन ऑर्गनाइजेशनल कमिटमेंट थ्रू मॉडरेशन एंड मेडिएशन मॉडल. सस्टेनेबल फ़्यूचर्स, 7, 100173. https://doi.org/10.1016/j.sftr.2024.100173

62 अगुइनिस, एच., एंड ग्लावास, ए. (2012). व्हाट वी नो एंड डोंट नो अबाउट कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी: ए रिव्यू एंड रिसर्च अजेंडा. जर्नल ऑफ मैनेजमेंट, 38(4), 932–968. https://doi.org/10.1177/0149206311436079

63 न्दियाये, एन., रज़ाक, एल. ए., नागायेव, आर., एंड एंग, ए. (2018). डीमिस्टिफाइंग स्मॉल एंड मीडियम एंटरप्राइज़ेज़' (एसएमईज़) परफ़ॉरमेंस इन इमर्जिंग एंड डेवलपिंग इकॉनमीज़. बोर्सा इस्तांबुल रिव्यू, 18(4), 269–281. https://doi.org/10.1016/j.bir.2018.04.003

64 पियाथनावोंग, वी., गरज़ा-रेयेस, जे. ए., कुमार, वी., आदि. (2019). द अडॉप्शन ऑफ ऑपरेशनल इन्वायर्नमेंटल सस्टेनेबिलिटी अप्रोचेज़ इन द थाई मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर. जर्नल ऑफ क्लीनर प्रोडक्शन, 220, 507–528. https://doi.org/10.1016/j.jclepro.2019.02.093

65 अल्बीनो, वी., बालिसे, ए., एंड डैन्जेलिको, आर. एम. (2009). इन्वायर्नमेंटल स्ट्रैटेजीज़ एंड ग्रीन प्रोडक्ट डेवलपमेंट: एन ओवरव्यू ऑन सस्टेनेबिलिटी-ड्रिवन कंपनीज़. बिज़नेस स्ट्रैटेजी एंड द इन्वायर्नमेंट, 18(2), 83–96. https://doi.org/10.1002/bse.638

66 लियोनिद्, एल. सी., क्रिस्टोडूलाइडिस, पी., क्यर्गिदू, एल. पी., एंड पलिहावदाना, डी. (2017). इंटरनल ड्राइवर्स एंड परफ़ॉरमेंस कन्सीक्वेन्सेज़ ऑफ स्मॉल फ़र्म ग्रीन बिज़नेस स्ट्रैटेजी: द मॉडरेटिंग रोल ऑफ एक्सटर्नल फोर्सेज़. जर्नल ऑफ बिज़नेस एथिक्स, 140(3), 585–606. https://doi.org/10.1007/s10551-015-2670-9

67 मूसा, एच., एंड चिन्नियाह, एम. (2016). मलेज़ियन एसएमईज़ डेवलपमेंट: फ़्यूचर एंड चैलेंजेज़ ऑन गोइंग ग्रीन. प्रोसीडिया – सोशल एंड बिहेवियरल साइंसेज़, 224, 254–262. https://doi.org/10.1016/j.sbspro.2016.05.457

68 हार्ट, एस. एल. (1995). ए नैचुरल-रिसोर्स-बेस्ड व्यू ऑफ द फ़र्म. अकाडमी ऑफ मैनेजमेंट रिव्यू, 20(4), 986–1014.

69 हॉफमान, के. एच., थेयेल, जी., एंड वुड, सी. एच. (2012). आइडेंटिफाइंग फ़र्म केपे बिलिटीज़ ऐज़ ड्राइवर्स ऑफ इन्वायर्नमेंटल मैनेजमेंट एंड सस्टेनेबिलिटी प्रैक्टिसेज़: एविडेंस फ्रॉम स्मॉल एंड मीडियम-साइज़्ड मैन्युफैक्चरर्स. बिज़नेस स्ट्रैटेजी एंड द इन्वायर्नमेंट, 21(8), 530–545. https://doi.org/10.1002/bse.739

70 पार्क, जे., किम, एच. जे., एंड मैकक्लीयरी, के. डब्ल्यू. (2014). द इम्पैक्ट ऑफ टॉप मैनेजमेंट्स इन्वायर्नमेंटल एटिट्यूड्स ऑन होटल कंपनीज़' इन्वायर्नमेंटल मैनेजमेंट. जर्नल ऑफ हॉस्पिटैलिटी एंड टूरिज़्म रिसर्च, 38(1), 95–115. https://doi.org/10.1177/1096348012452666

71 को, डब्ल्यू. डब्ल्यू., एंड लियू, जी. (2017). इन्वायर्नमेंटल स्ट्रैटेजी एंड कॉम्पेटिटिव एडवांटेज: द रोल ऑफ स्मॉल- एंड मीडियम-साइज़्ड एंटरप्राइज़ेज़' डायनेमिक केपे बिलिटीज़. बिज़नेस स्ट्रैटेजी एंड द इन्वायर्नमेंट, 26(5), 584–596. https://doi.org/10.1002/bse.1938

72 अबोएल्मागेद, एम., एंड हाशेम, जी. (2019). एब्सॉरप्टिव केपे बिलिटी एंड ग्रीन इनोवेशन अडॉप्शन इन एसएमईज़: द मेडिएटिंग इफेक्ट्स ऑफ सस्टेनेबल ऑर्गनाइजेशनल केपे बिलिटीज़. जर्नल ऑफ क्लीनर प्रोडक्शन, 220, 853–863. https://doi.org/10.1016/j.jclepro.2019.02.150

73 रामली, वाई., इमानिंगसिह, ई. एस., शिरातीना, ए., आदि. (2022). इन्वायर्नमेंटल सस्टेनेबिलिटी: टू एन्हांस ऑर्गनाइजेशनल अवेयरनेस टुवर्ड्स ग्रीन इन्वायर्नमेंटल कन्सर्न. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एनर्जी इकोनॉमिक्स एंड पॉलिसी, 12(3), 307–316. https://doi.org/10.32479/ijeep.13275

74 जिआंग, डब्ल्यू., चाई, एच., शाओ, जे., एंड फेंग, टी. (2018). ग्रीन एंटरप्रेन्योरियल ओरिएंटेशन फ़ॉर एन्हांसिंग फ़र्म परफ़ॉरमेंस: ए डायनेमिक केपे बिलिटी परस्पेक्टिव. जर्नल ऑफ क्लीनर प्रोडक्शन, 198, 1311–1323. https://doi.org/10.1016/j.jclepro.2018.07.104

75 चान, ई. एस. डब्ल्यू., हॉन, ए. एच. वाई., चान, डब्ल्यू., एंड ओकुमुस, एफ. (2014). व्हाट ड्राइव्स इम्प्लॉईज़' इंटेंशन्स टू इम्प्लिमेंट ग्रीन प्रैक्टिसेज़ इन होटल्स? द रोल ऑफ नॉलेज, अवेयरनेस, कन्सर्न एंड इकोलॉजिकल बिहेवियर. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हॉस्पिटैलिटी मैनेजमेंट, 40, 20–28. https://doi.org/10.1016/j.ijhm.2014.03.001

76 अब्दुल-मुह्मिन, ए. जी. (2007). एक्सप्लेनिंग कन्ज़्यूमर्स' विलिंगनेस टू बी इन्वायर्नमेंटली फ्रेंडली. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कन्ज़्यूमर स्टडीज़, 31(3), 237–247. https://doi.org/10.1111/j.1470-6431.2006.00528.x

77 अब्राहम, जे., पैन, एम., एंड चेयरियानी, आर. (2015). एन इन्वेस्टिगेशन ऑन सिनिसिज़्म एंड इन्वायर्नमेंटल सेल्फ-इफिकेसी ऐज़ प्रिडिक्टर्स ऑफ प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर. साइकोलॉजी, 6(3), 234–242.

78 अमन, एस., हसन, एन. एम., ख़ट्टक, एम. एन., मौस्तफ़ा, एम. ए., फ़ाख़री, एम., एंड अहमद, ज़ेड. (2023). करेक्शन: अमन इत्यादि. इम्पैक्ट ऑफ टूरिस्ट्स' इन्वायर्नमेंटल अवेयरनेस ऑन प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर विद द मेडिएटिंग इफेक्ट ऑफ टूरिस्ट्स' इन्वायर्नमेंटल कन्सर्न एंड मॉडरेटिंग इफेक्ट ऑफ टूरिस्ट्स' इन्वायर्नमेंटल अटैचमेंट (सस्टेनेबिलिटी 2021, 13, 12998). सस्टेनेबिलिटी, 15(4), आर्टिकल 3171.

79 बेगम, ए., जिंगवेई, एल., हाइडर, एम., अजमल, एम. एम., ख़ान, एस., एंड हान, एच. (2021). इम्पैक्ट ऑफ इन्वायर्नमेंटल मॉरल एजुकेशन ऑन प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर: डू साइकोलॉजिकल एम्पावरमेंट एंड इस्लामिक रेलिजॉसिटी मैटर? इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इन्वायर्नमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 18(4), आर्टिकल 1604.

80 बाइंडर, एम., ब्लैंकनबर्ग, ए. के., एंड गार्डिओला, जे. (2020). डज़ इट हैव टू बी ए सैक्रिफ़ाइस? डिफ़रेंट नोशन्स ऑफ द गुड लाइफ़, प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर एंड देयर हेटेरोजीनियस इम्पैक्ट ऑन वेलबीइंग. इकोलॉजिकल इकोनॉमिक्स, 167, आर्टिकल 106448.

81 ब्लोक, वी., वेसेलिंक, आर., स्टुडिंका, ओ., एंड केम्प, आर. (2015). एनकरेजिंग सस्टेनेबिलिटी इन द वर्कप्लेस: ए सर्वे ऑन द प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर ऑफ यूनिवर्सिटी इम्प्लॉईज़. जर्नल ऑफ क्लीनर प्रोडक्शन, 106, 55–67.

82 चक्रवर्ती, ए., सिंह, एम. पी., एंड रॉय, एम. (2017). ए स्टडी ऑफ गोल फ्रेम्स शेपिंग प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर इन यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सस्टेनेबिलिटी इन हायर एजुकेशन, 18(7), 1291–1310.
83 चुक्रूओरजी, जे. सी., इऑरफ़ा, एस. के., न्ज़ेआदिबे, टी. सी., एंड इफ़ेगवाज़ी, सी. एम. (2017). रोल ऑफ क्लाइमेट चेंज अवेयरनेस एंड प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर इन सब्जेक्टिव वेलबीइंग. नाइजीरियन जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज़, 13(1), 1–15.
84 चुंग, एच. एफ., शि, जे. डब्ल्यू., एंड सन, के. जे. (2019). व्हाई इम्प्लॉईज़ कॉन्ट्रिब्यूट टू प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर: द रोल ऑफ प्लुरलिस्टिक इग्नोरेंस इन चाइनीज़ सोसाइटी. सस्टेनेबिलिटी, 12(1), आर्टिकल 239.
85 देवी, डब्ल्यू., एंड दियन, आर. एस. (2018). अंडरग्रेजुएट स्टूडेंट्स' प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर इन डेली प्रैक्टिस. ई3एस वेब ऑफ कॉन्फ़्रेंसेज़, 31, आर्टिकल 09025. https://doi.org/10.1051/e3sconf/20183109025
86 एस्पिना, एम. आर. एस. (2018). इफेक्ट्स ऑफ डेमोग्राफिक्स, इन्वायर्नमेंटल नॉलेज, एंड कन्ज़्यूमर मोटिवेशन ऑन हाई स्कूल स्टूडेंट्स' प्रो-इन्वायर्नमेंटल कन्ज़्यूमर बिहेवियर. अलिपाटो: ए जर्नल ऑफ बेसिक एजुकेशन, 9, 1–20.
87 एज़े, ई. (2020). सोशियोग्राफिक एनालिसिस ऑफ क्लाइमेट चेंज अवेयरनेस एंड प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर ऑफ सेकेंडरी स्कूल टीचर्स एंड स्टूडेंट्स इन नस्सुका लोकल गवर्नमेंट एरिया ऑफ एनुगू स्टेट, नाइजीरिया. इंटरनेशनल रिसर्च इन ज्योग्राफिकल एंड इन्वायर्नमेंटल एजुकेशन, 29(1), 89–105.
88 फ़दज़िल, डी. एच., युस्लिज़ा, एम. वाई., एंड ङाह, ए. एच. (2021). डिटर्मिनेंट्स ऑफ प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर अमंग स्टूडेंट्स. यूनिवर्सिटी मलेशिया तेरेंगानू जर्नल ऑफ अंडरग्रेजुएट रिसर्च, 3(2), 89–98.
89 फ़ॉस्टर, बी., मुहम्मद, ज़ेड., युस्लिज़ा, एम. वाई., फ़ाएज़ाह, जे. एन., जोहन्स्याह, एम. डी., योंग, जे. वाई., ... फ़ावेहिन्मी, ओ. (2022). डिटर्मिनेंट्स ऑफ प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर इन द वर्कप्लेस. सस्टेनेबिलिटी, 14(8), आर्टिकल 4420.
90 ग्बेरेब्बी, एम. ए., अडेनिजी, ए. ए., ओयेवुनमी, ओ. ए., एंड ओनायेयमी, ओ. ओ. (2021). ग्रीन ट्रेनिंग: ए कैटेलिस्ट फ़ॉर स्टूडेंट्स' प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर इन हायर इंस्टिट्यूशन्स इन नाइजीरिया. इन प्रोसीडिंग्स ऑफ एडीवीईडी 2021 (7th) (pp. xx–xx).
91 गिफ़र्ड, आर., एंड निल्सन, ए. (2014). पर्सनल एंड सोशल फ़ैक्टर्स दैट इन्फ्लुएंस प्रो-इन्वायर्नमेंटल कन्सर्न एंड बिहेवियर: ए रिव्यू. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोलॉजी, 49(3), 141–157. https://doi.org/10.1002/ijop.12034
92 हांदोयो, बी., अस्तिना, आई. के., एंड मकुम्बाची, आर. एल. (2021, मार्च). स्टूडेंट्स' इन्वायर्नमेंटल अवेयरनेस एंड प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर: प्रिलिमिनरी स्टडी ऑफ ज्योग्राफी स्टूडेंट्स ऐट स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ मलंग. इन आईओपी कॉन्फ़्रेंस सीरीज़: अर्थ एंड इन्वायर्नमेंटल साइंस (वॉल्यूम 683, इशू 1, आर्टिकल 012049). आईओपी पब्लिशिंग.
93 हार्डिंग, डी., कादियोनो, ए. एल., हाफ़ियार, एच., एंड विबोवो, एच. (2018). माइंड द गैप: व्हाट आर द बैरियर्स टू प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर अमंग स्टूडेंट्स? जर्नल ऑफ बिज़नेस एंड सोशल रिव्यू इन इमर्जिंग इकॉनमीज़, 4(1), 1–6. https://doi.org/10.26710/jbsee.v4i1.351

94 हेयज़, ए. एफ. (2012). PROCESS: ए वर्सटाइल कम्प्यूटेशनल टूल फ़ॉर ऑब्ज़र्व्ड वैरिएबल मेडिएशन, मॉडरेशन, एंड कंडीशनल प्रोसेस मॉडलिंग [व्हाइट पेपर]. http://www.afhayes.com/public/process2012.pdf
95 हॉफ्मन, सी., होप्पे, जे. ए., एंड ज़ीमैन, एन. (2022). हू हैज़ द फ़्यूचर इन माइंड? जेंडर, टाइम परस्पेक्टिव्स, एंड प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर. इन्वायर्नमेंटल रिसर्च लेटर्स, 17(10), आर्टिकल 104026.
96 होल्बर्ट, आर. एल., क्वाक, एन., एंड शाह, डी. वी. (2003). इन्वायर्नमेंटल कन्सर्न, पैटर्न्स ऑफ टेलीविज़न व्यूइंग, एंड प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर्स: इंटीग्रेटिंग मॉडल्स ऑफ मीडिया कन्ज़म्प्शन एंड इफेक्ट्स. जर्नल ऑफ ब्रॉडकास्टिंग एंड इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, 47(2), 177–196.
97 हुआंग, एच. सी., लिन, टी. एच., लाई, एम. सी., एंड लिन, टी. एल. (2014). इन्वायर्नमेंटल कॉन्शसनेस एंड ग्रीन कस्टमर बिहेवियर: एन एग्ज़ैमिनेशन ऑफ मोटिवेशन क्राउडिंग इफेक्ट. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हॉस्पिटैलिटी मैनेजमेंट, 40, 139–149.
98 जंग, जे. डब्ल्यू., एंड चो, एस. वाई. (2015). द रिलेशनशिप अमंग एडोलेसेंट्स’ इन्वायर्नमेंटल एक्सपीरियंस, इन्वायर्नमेंटल कॉन्शसनेस एंड प्रो-इन्वायर्नमेंटल कन्ज़म्पशन बिहेवियर. जर्नल ऑफ इन्वायर्नमेंटल साइंस इंटरनेशनल, 24(3), 329–337.
99 करामी, जे., देहघान, एफ., एंड यज़्दानबख्श, के. (2021). द इम्पैक्ट्स ऑफ द थ्योरी ऑफ प्लान्ड बिहेवियर, इन्वायर्नमेंटल कन्सर्न एंड इंटेंशन टू बाय ग्रीन प्रोडक्ट्स ऑन प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर (केरमान्शाह, वेस्ट ऑफ ईरान). इन्वायर्नमेंटल एजुकेशन एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट, 9(4), 1–20. https://doi.org/10.30473/ee.2021.58502.2355
100 किम, एन., एंड ली, के. (2023). इन्वायर्नमेंटल कॉन्शसनेस, परचेस इंटेंशन, एंड एक्चुअल परचेस बिहेवियर ऑफ ईको-फ्रेंडली प्रोडक्ट्स: द मॉडरेटिंग इम्पैक्ट ऑफ सिचुएशनल कॉन्टेक्स्ट. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इन्वायर्नमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 20(7), आर्टिकल 5312. https://doi.org/10.3390/ijerph20075312
101 कुलिन, जे., एंड योहान्सन सेव़ा, आई. (2021). क्वालिटी ऑफ गवर्नमेंट एंड द रिलेशनशिप बिटवीन इन्वायर्नमेंटल कन्सर्न एंड प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर: ए क्रॉस-नेशनल स्टडी. इन्वायर्नमेंटल पॉलिटिक्स, 30(5), 727–752.
102 लार्सन, एम. ए., फ़ॉरेस्ट, एम., एंड बॉस्टियन, एल. (1981). पार्टिसिपेशन इन प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर. द जर्नल ऑफ इन्वायर्नमेंटल एजुकेशन, 12(3), 21–24.
103 लियर, के. डी. वी., एंड डनलैप, आर. ई. (1980). द सोशल बेसिस ऑफ इन्वायर्नमेंटल कन्सर्न: ए रिव्यू ऑफ हाइपोथेसिस, एक्सप्लेनेशंस एंड एम्पिरिकल एविडेंस. पब्लिक ओपिनियन क्वार्टरली, 44(2), 181–197.
104 लोउ, एक्स., एंड ली, एल. एम. डब्ल्यू. (2023). द रिलेशनशिप ऑफ इन्वायर्नमेंटल कन्सर्न विद पब्लिक एंड प्राइवेट प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर्स: ए प्री-रजिस्टरड मेटा-एनालिसिस. यूरोपियन जर्नल ऑफ सोशल साइकोलॉजी, 53(1), 1–14.
105 मार्कल, जी. एल. (2013). प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर: डज़ इट मैटर हाउ इट्स मेज़र्ड? डेवलपमेंट एंड वेलिडेशन ऑफ द प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर स्केल (PEBS). ह्यूमन इकोलॉजी, 41(6), 905–914.

106 मतीन, ए. उल, निसार, क्यू. ए., एंड नासिर, एन. (2023). फ़ॉस्टरिंग प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर्स इन हेल्थकेयर ऑर्गनाइजेशन्स: एन एम्पिरिकल एनालिसिस ऑफ साइकोलॉजिकल एंड स्ट्रैटेजिक फ़ैक्टर्स. एशिया पैसिफ़िक मैनेजमेंट रिव्यू, 28(1), 13–23. https://doi.org/10.1016/j.apmrv.2022.01.004

107 मर्गेलमेयर, जे. (2019). "लास्ट वीक आई वाज़ ऑन ए क्लाइमेट मार्च इन न्यूयॉर्क": द डिस्क्रेपेंसी बिटवीन इन्वायर्नमेंटल कन्सर्न एंड प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर विदिन द मिलेनियल जेनरेशन (बैचलर'स थीसिस, यूनिवर्सिटी ऑफ ट्वेंटे). यूनिवर्सिटी ऑफ ट्वेंटे स्टूडेंट थीसेज़ रिपॉज़िटरी.

108 मेटग्रुप. (n.d.). इन्वायर्नमेंटल कॉन्शसनेस: डेफ़िनिशन एंड ट्रेंड्स. माइंड द फ़्यूआचर. रिट्रीव्ड 1 अगस्त 2023, फ्रॉम https://group.met.com/en/mind-thefyouture/mindthefyouture/environmentalconsciousness

109 मिनेलगैते, ए., एंड लियोबिकिएने, जी. (2021). चेंजेज़ इन प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर एंड इट्स डिटर्मिनेंट्स ड्यूरिंग लॉन्ग-टर्म पीरियड इन ए ट्रांज़िशन कंट्री ऐज़ लिथुआनिया. इन्वायर्नमेंट, डेवलपमेंट एंड सस्टेनेबिलिटी, 23(11), 16083–16099.

110 मिश्रा, बी., एंड दास, एस. (2015). ए स्टडी ऑन द पैरेंटल इन्फ्लुएंस ऑन द डेवलपमेंट ऑफ प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर अमंग सेकेंडरी स्टूडेंट्स इन मालदा डिस्ट्रिक्ट. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंफॉर्मेटिव एंड फ़्यूचरिस्टिक रिसर्च, 2(7), 2125–2135.

111 पासेक, एम., एंड म्यत्स्कन, टी. (2022). आउटडोर एंड इंडोर स्पोर्ट्स प्रेफरेंसेज़ ऑफ स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू देयर प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर. फ़िज़िकल एजुकेशन ऑफ स्टूडेंट्स, 26(2), 98–104.

112 सैफुलिना, एन., कार्बालो-पेनेला, ए., एंड रुज़ो-सानमार्टिन, ई. (2023). इफेक्ट्स ऑफ पर्सनल इन्वायर्नमेंटल अवेयरनेस एंड इन्वायर्नमेंटल कन्सर्न ऑन इम्प्लॉईज़' वॉलन्टरी प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर: ए मेडिएशन एनालिसिस इन इमर्जिंग कंट्रीज़. बाल्टिक जर्नल ऑफ मैनेजमेंट, 18(1), 1–18.

113 शिउ, आर., इटो, एम., एंड ओकामुरा, के. (2019). द इन्वायर्नमेंटल कॉन्शसनेस ऑफ यंग चिल्ड्रन एंड स्टूडेंट्स इन ताइवान. जापनीज़ जर्नल ऑफ इन्वायर्नमेंटल एजुकेशन, 29(1), 2–xx. https://doi.org/10.5647/jsoee.29.1_2

114 सी, डब्ल्यू., जियांग, सी., एंड मंग, एल. (2022). द रिलेशनशिप बिटवीन इन्वायर्नमेंटल अवेयरनेस, हैबिटैट क्वालिटी, एंड कम्युनिटी रेज़िडेंट्स' प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर—मेडिएटेड इफेक्ट्स मॉडल एनालिसिस बेस्ड ऑन सोशल कैपिटल. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इन्वायर्नमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 19(20), आर्टिकल 13253. https://doi.org/10.3390/ijerph192013253

115 स्रीनिवासन, आर., एंड बोरकर, यू. (2021). ए स्टडी ऑफ प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर ऐज़ ए कंपोनेंट ऑफ नैचुरलिस्टिक इंटेलिजेंस अमंगस्ट इन- सर्विस स्कूल टीचर्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च, 10(x), 25–29. https://doi.org/10.36106/ijsr/8324035

116 टैम, के. पी., एंड चान, एच. डब्ल्यू. (2017). इन्वायर्नमेंटल कन्सर्न हैज़ ए वीकर एसोसिएशन विद प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर इन सम सोसाइटीज़ देन अदर्स: ए क्रॉस-कल्चरल साइकोलॉजी परस्पेक्टिव. जर्नल ऑफ इन्वायर्नमेंटल साइकोलॉजी, 53, 213–223.

117 टैम, के. पी., एंड चान, एच. डब्ल्यू. (2018). जनरलाइज़्ड ट्रस्ट नैरोस द गैप बिटवीन इन्वायर्नमेंटल कन्सर्न एंड प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर: मल्टीलेवल एविडेंस. ग्लोबल इन्वायर्नमेंटल चेंज, 48, 182–194.

118 थोंधलाना, जी., एंड ह्लाल्श्वायो, टी. एन. (2018). प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर इन स्टूडेंट रेज़िडेन्सेज़ ऐट रोड्स यूनिवर्सिटी, साउथ अफ़्रीका. सस्टेनेबिलिटी, 10(8), आर्टिकल 2746.

119 वास्कॉन्सेलोस, सी., सिल्वा, जे., एंड रिबेरो, टी. (2021). प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर्स फ़ॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट: ए सर्वे विद हायर एजुकेशन स्टूडेंट्स. इन आईसीईआरआई2021 प्रोसीडिंग्स (pp. 541–547). आईएटेड.

120 वांग, क्यू., कोउ, ज़ेड., सन, एक्स., वांग, एस., वांग, एक्स., जिंग, एच., एंड लिन, पी. (2022). प्रिडिक्टिव एनालिसिस ऑफ द प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर ऑफ कॉलेज स्टूडेंट्स यूज़िंग ए डिसीज़न-ट्री मॉडल. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इन्वायर्नमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 19(15), आर्टिकल 9407.

121 वांग, एक्स., वैन डेर वेर्फ़, ई., बाउमन, टी., हार्डर, एम. के., एंड स्टेग, एल. (2021). आई एम वर्सेस वी आर: हाउ बायोस्फेरिक वैल्यूज़ एंड इन्वायर्नमेंटल आइडेंटिटी ऑफ इंडिविजुअल्स एंड ग्रूप्स कैन इन्फ्लुएंस प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर. फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी, 12, आर्टिकल 618956.

122 वूर्ट्ज़, टी. (2015). पर्सनैलिटी ट्रेट्स असोसिएटेड विद इन्वायर्नमेंटल कन्सर्न (डॉक्टोरल डिसर्टेशन, वाल्डेन यूनिवर्सिटी). प्रो-क्वेस्ट डिसर्टेशंस एंड थीसेज़ ग्लोबल.

123 यांग, एस. (2005). प्रो-इन्वायर्नमेंटल हाउज़िंग कॉन्शसनेस एंड बिहेवियर ऑफ हाउसवाइव्स इन उल्सान. जर्नल ऑफ द कोरियन होम इकनॉमिक्स एसोसिएशन, 43(1), 191–201.

124 युस्लिज़ा, एम. वाई., अमिरुदिन, ए., रहादी, आर. ए., निक सराह अतिराह, एन. ए., रमायाह, टी., मुहम्मद, ज़ेड., दल मास, एफ., मास्सारो, एम., सापुत्रा, जे., एंड मोक्हलिस, एस. (2020). एन इन्वेस्टिगेशन ऑफ प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट इन मलेशिया. सस्टेनेबिलिटी, 12(17), आर्टिकल 7083. https://doi.org/10.3390/su12177083

125 युस्लिज़ा, एम. वाई., फ़ाएज़ाह, जे. एन., मट, एन. एच. एन., सापुत्रा, जे., मुहम्मद, ज़ेड., मुहम्मद, ए. एस., एंड रमायाह, टी. (2021). मॉडलिंग प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर इन द वर्कप्लेस: ए प्रिलिमिनरी स्टडी. इन प्रोसीडिंग्स ऑफ द 11th ऐन्युअल इंटरनेशनल कॉन्फ़्रेंस ऑन इंडस्ट्रियल इंजीनियरिंग एंड ऑपरेशन्स मैनेजमेंट (pp. 3953–3963).

126 ज़ेंग, ज़ेड., झोंग, डब्ल्यू., एंड नाज़, एस. (2023). कैन इन्वायर्नमेंटल नॉलेज एंड रिस्क परसेप्शन मेक ए डिफ़रेंस? द रोल ऑफ इन्वायर्नमेंटल कन्सर्न एंड प्रो-इन्वायर्नमेंटल बिहेवियर इन फ़ॉस्टरिंग सस्टेनेबल कन्ज़म्पशन बिहेवियर. सस्टेनेबिलिटी, 15(6), आर्टिकल 4791.